Roshan Lal
Digitally signed by Roshan Lal
Date: 2024.03.07 11:29:59 +05'30'

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Human Values through the Eyes of Literature

By: Charu Ahluwalia, Deptt. of English

Dated: 2018

Human Values Through The Eyes of Literature

Charu Ahluwalia

"We must become the change we want to see in the world". These words by Mahatma Gandhi are an awakening call for all human beings to first observe moral values themselves and then preach them to others. Martin Luther King had very rightly said that if humanity is to progress then Gandhi is inescapable. Gandhi had very strongly supported the need of moral value education along with physical and general education. His emphasis on truth, purity, love and faith are guiding principles of life. Gandhi emphasised on the role of a teacher and placed his position beyond the knowledge of books. Simple living and health education were his primary concern. Just like Gandhi, Swami Vivekanand too considered school curriculum as a shaping tool for making students moral.

But before we move ahead on the weightiness and feasibility of human values in our education system, let us first try to decipher the inception of human values in human life. Human values lie in close proximity with literature. Long before civilization started in this world, stories were found among the constellations, beneath the depths of oceans and within the woodland realms. Long before language was invented, stories were told and engraved upon the stone tablets and wall carvings.

From centuries old mythological texts and scriptures to present day literature, all lay the foundation of humanity's culture, beliefs and traditions. Everything that happens within a society can be written and learned from a piece of literature. It cultivates wonders,

41. प्राचीन शाश्वत मूल्यों की आधुनिक युग में प्रासंगिकता
मानव मूल्य और सामाजिक सरोकार 240
अनीता

42. मानवीय मूल्यों की स्थापना में 'रहीम' का स्थान 245
डॉ. राखी के. शाह

43. दैहिक स्तर पर नारी शोषण 'गुनाह-बेगुनाह' उपन्यास के संदर्भ में 249
डॉ. एकता रानी

English

44. Environmental Ethics in Human Value 255
Dr. Shashi Sharma

45. Moral Ethics and Buddhism 262
Tsering Angchok

46. Human Values Through The Eyes of Literature 268
Charu Ahluwalia

47. Medical Ethics In India: Principles of Medical Profession 272
Anita Devi

48. The Palaeography of The Tâkarî Script In Himachal Pradesh 27
Kishori Lal Chandel

49. Importance of Human Values in the Society 29
Dr. Sheetal Thakur

50. Religious Tolerance in Ancient India 2
Rameshwar Singh

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Human Values through the Eyes of Literature

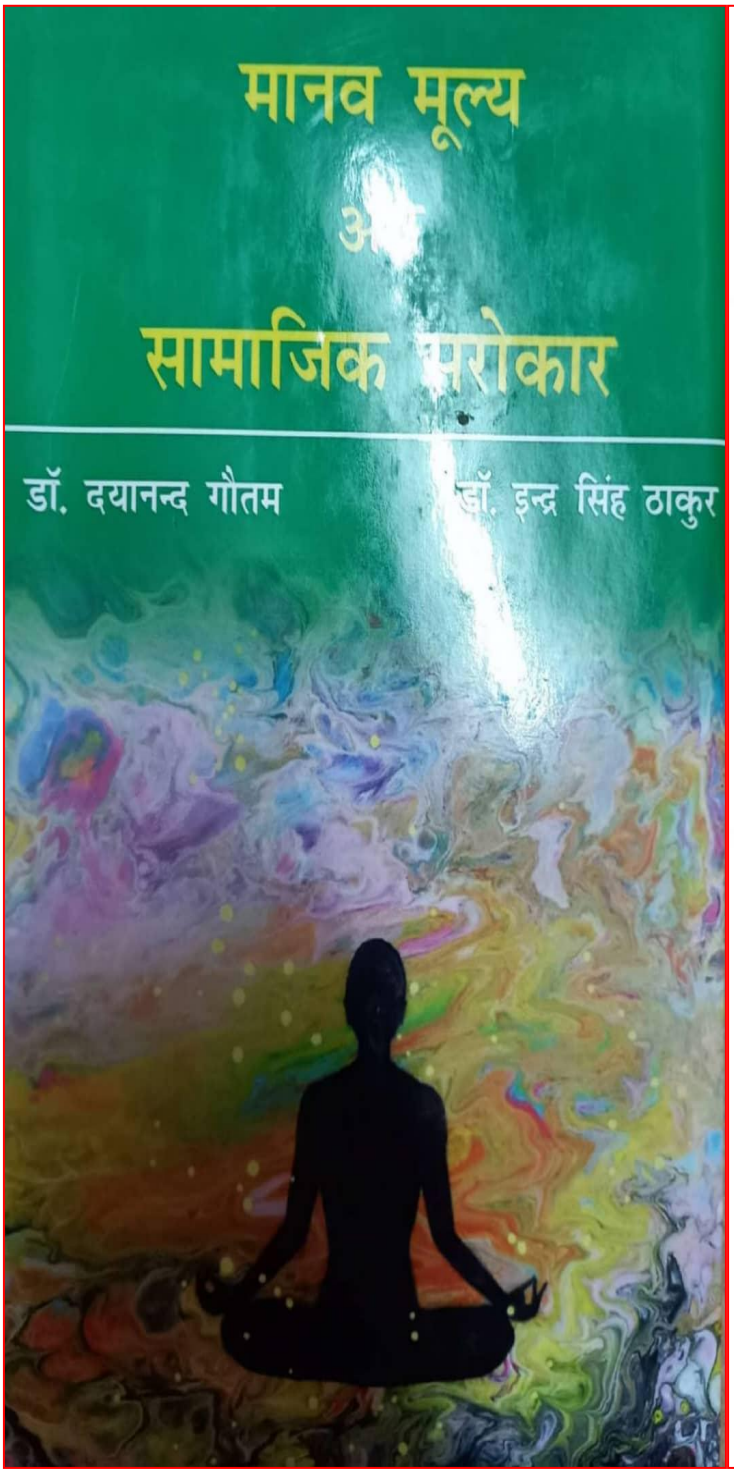

प्रकाशक : सानिया पब्लिकेशन
323, गली नं. 15, कर्दमपुरी एक्सटेंशन
दिल्ली-110094
मोबाइल : 7292063887, 9818128487
email : mdsaleem885@gmail.com

ISBN : 978-81-907122-0-0

© : संपादक

मूल्य : 750 रुपये

आवरण : एम. डी. सलीम

प्रथम संस्करण : 2018

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स
दिल्ली

Manav Mulya Aur Samajik Sarokar
Edited By Dr. Dayanand Gautam, Indra Singh Thakur

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय संगीत का इतिहास

By: Dr. Surat Ram Thakur Deptt. of Music
Dated: 2018

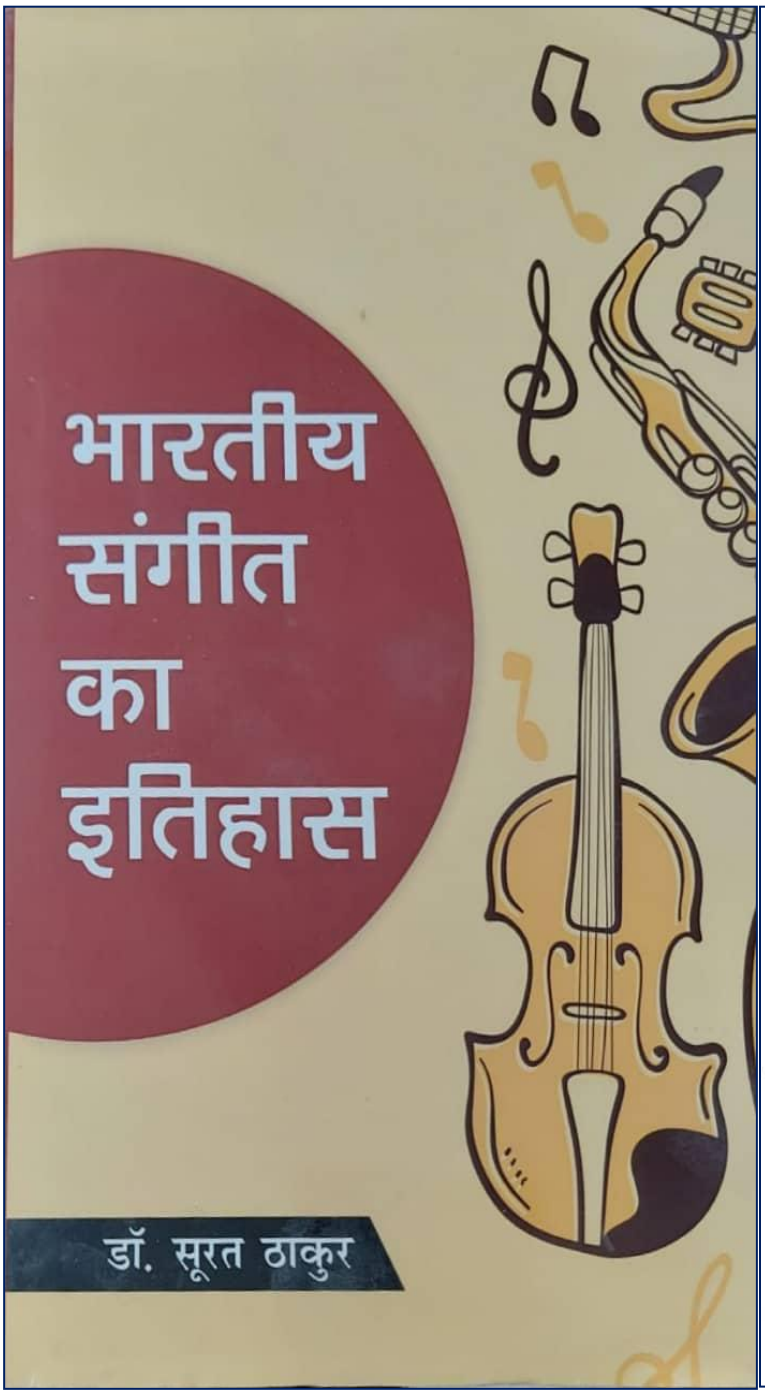

डॉ. सूरत ठाकुर

प्रकाशक : प्रशान्त बुक डिस्ट्रीब्यूटर
रूम नं. 213, 7/28, महावीर स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
Email Id : prashantpbd@yahoo.co.in
दूरभाष : 011-13586184 मो. 9811734184
प्रथम संस्करण : 2018
ISBN : 978-93-83963-60-7
मूल्य : 695/-

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज और राम

By: Dr. Rupa Thakur Deptt. Of Hindi

Dated: 2018

Attested

Edited Book : 2018

भारतीय समाज और राम

डॉ. अशोक कुमार शर्मा
डॉ. रूपा ठाकुर
एसिसटेन्ट प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कुल्लू (हि. प्र.)

भारतीय समाज में जीवन के आदर्श मूल्यों, अनेकता में एकता की संस्कृति, सामाजिक आदर्शों का जो समन्वय मिलता है, वह त्रेता युग की विषम परिस्थितियों को बदलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम के बिना सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण विश्व का इतिहास साक्षी है कि महात्माओं का आविर्भाव तब होता है जब जनमानस को मानवता का सुनिर्दिष्ट पथ नहीं मिलता। ऐसी विषम परिस्थिति में ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता होती है जो आप जनमानस के हृदय में चेतना का संचार कर सके। गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान श्री राम की गाथा को तद्युगीन परिवेश के अनुकूल विस्तार से 'रामचरितमानस' में वर्णित किया है। महात्माओं-महापुरुषों और अवतारी लीला पुरुषों के आदर्श इसलिए दोहराए जाते हैं ताकि समस्त जनमानस अपने अन्तःकरण में उसे आत्मसात कर समाज में श्रेष्ठता धारण करें। मानवीय इतिहास व चिंतन क्रम के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन किया जाए तो प्रतीत होता है कि 'राम चरित मानस' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के सार्वभौमिक, सार्वकालिक मर्यादा का कारण उनका परमोज्ज्वल चरित्र है। 'मानस' का लक्ष्य मर्यादाओं के उन मूल्यों की स्थापना हो, जिससे समाज का कल्याण हो और वह समाज समृद्धिशाली हो। "तुलसी ने सामाजिक चेतना को वह भूमि प्राप्त कर ली थी, जहां वैयक्तिक आदर्शों और सामाजिक मूल्यों में कोई अंतर नहीं रह जाता। उनके कथानायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम इस धरती पर मानव-जीवन के आदर्श एवं महत्तम रूप की स्थापना के लिए अवतरित हुए थे उन्होंने अपने सारे कार्य व्यापारों का आयोजन समाज के भीतर किया

27. रामायणकाल में मूल्य व वर्तमान भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में रामकथाओं की प्रासंगिकता
चारु हाण्डा 248
28. रामायण काल में संगीत
डॉ. श्रुति शर्मा 254
29. तुलसीदास की नारी विषयक दृष्टि
डॉ. शोभा रानी 259
30. राम भक्ति-साहित्य में नारी-विमर्श
डॉ. नीलम देवी 263
31. भारतीय साहित्य में रामकथा की परम्परा और महत्त्व
डॉ. लोकेश सिंह 269
32. भारतीय समाज और राम
डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. रूपा ठाकुर 274
33. भारतीय संस्कृति और राम भक्ति-साहित्य
डॉ. दीप्ति 283
34. रामकाव्य में नारी-विमर्श
रवींद्र कुमार 292
35. तुलसीदास कृत रामकाव्य में समन्वयवादिता
डॉ. तेजिन्द्र भाटिया 299
36. तुलसी और हिंदी राम साहित्य
तरसेम सिंह 308
37. श्रीराम के जीवन पर आधारित हिंदी उपन्यास 'अवसर'
गणेश तारावंद खैरे 314
38. श्री रामचरितमानस में नारी पात्र : एक विवेचन
रमणीक मोहनी महता 318
39. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस में व्यक्त मानवीय-मूल्यों की आवश्यकता
उमाकान्त 324
40. तुलसी और राम
बलजीत कौर 331
41. राम भक्ति-साहित्य में मानव-मूल्य
देविन्दर सिंह 342

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज और राम

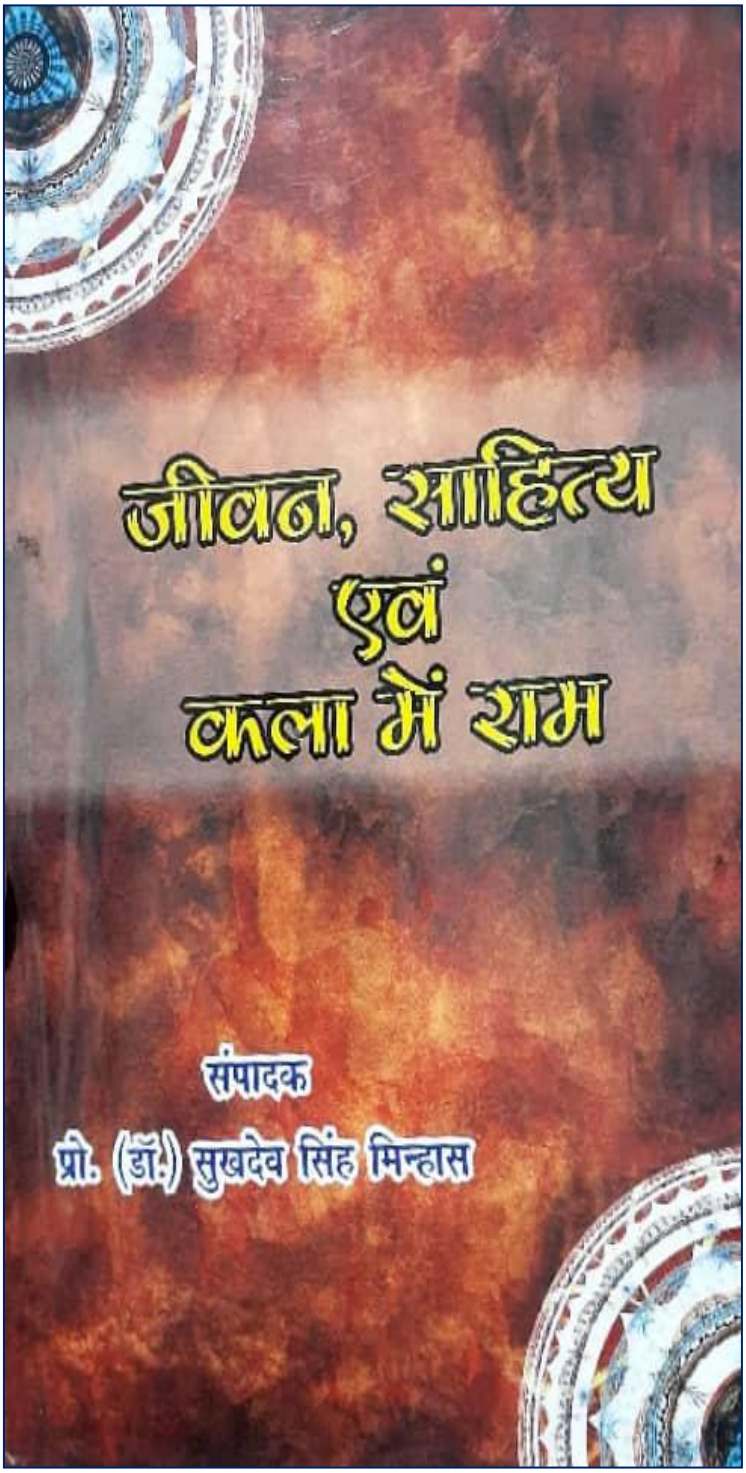

ISBN : 978-81-86400-346-x

© : संपादक

प्रकाशक : निर्मल पब्लिकेशन्स्
ए-139, गली नं. 3,
कबीर नगर, दिल्ली-110094
मोबा. : 0-9350295129

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 1100.00 रुपए

शब्दांकन :
अमर कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110053

मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रैस, दिल्ली-110032

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज और राम

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. Of Hindi
Dated: 2018

Attested

32

भारतीय समाज और राम

Edited Book : 2018

डॉ. अशोक कुमार शर्मा
डॉ. रूपा ठाकुर
एसिसटेन्ट प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कुल्लू (हि. प्र.)

भारतीय समाज में जीवन के आदर्श मूल्यों, अनेकता में एकता की संस्कृति, सामाजिक आदर्शों का जो समन्वय मिलता है, वह त्रेता युग की विषम परिस्थितियों को बदलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम के बिना सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण विश्व का इतिहास साक्षी है कि महात्माओं का आविर्भाव तब होता है जब जनमानस को मानवता का सुनिर्दिष्ट पथ नहीं मिलता। ऐसी विषम परिस्थिति में ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता होती है जो आम जनमानस के हृदय में चेतना का संचार कर सके। गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान श्री राम की गाथा को तद्युगीन परिवेश के अनुकूल विस्तार से 'रामचरितमानस' में वर्णित किया है। महात्माओं-महापुरुषों और अवतारी लीला पुरुषों के आदर्श इसलिए दोहराए जाते हैं ताकि समस्त जनमानस अपने अन्तःकरण में उसे आत्मसात कर समाज में श्रेष्ठता धारण करें। मानवीय इतिहास व चिंतन क्रम के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन किया जाए तो प्रतीत होता है कि 'राम चरित मानस' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के सार्वभौमिक, सार्वकालिक मर्यादा का कारण उनका परमोज्ज्वल चरित्र है। 'मानस' का लक्ष्य मर्यादाओं के उन मूल्यों की स्थापना हो, जिससे समाज का कल्याण हो और वह समाज समृद्धिशाली हो। "तुलसी ने सामाजिक चेतना की वह भूमि प्राप्त कर ली थी, जहां वैयक्तिक आदर्शों और सामाजिक मूल्यों में कोई अंतर नहीं रह जाता। उनके कथानायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम इस धरती पर मानव-जीवन के आदर्श एवं महत्तम रूप की स्थापना के लिए अवतरित हुए थे उन्होंने अपने सारे कार्य व्यापारों का आयोजन समाज के भीतर किया

27. रामायणकाल में नृत्य व वर्तमान भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में रामकथाओं की प्रासंगिकता
चारु शर्मा 248
28. रामायण काल में संगीत
डॉ. श्रुति होरा 254
29. तुलसीदास की नारी विषयक दृष्टि
डॉ. शोभा रानी 259
30. राम भक्ति-साहित्य में नारी-विमर्श
डॉ. नीलम देवी 263
31. भारतीय साहित्य में रामकथा की परम्परा और महत्त्व
डॉ. लोकेश सिंह 269
32. भारतीय समाज और राम
डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. रूपा ठाकुर 274
33. भारतीय संस्कृति और राम भक्ति-साहित्य
डॉ. दीप्ति 283
34. रामकाव्य में नारी-विमर्श
रवींद्र कुमार 292
35. तुलसीदास कृत रामकाव्य में समन्वयवादिता
डॉ. तेजिन्द्र भाटिया 299
36. तुलसी और हिंदी राम साहित्य
तरसेम सिंह 308
37. श्रीराम के जीवन पर आधारित हिंदी उपन्यास 'अवतार'
गणेश ताराचंद हैरे 314
38. श्री रामचरितमानस में नारी पात्र : एक विवेचन
रमणीक मोहनी महता 318
39. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस में व्यक्त मानवीय-मूल्यों की आवश्यकता
उमाकान्त 324
40. तुलसी और राम
बलजीत कौर 331
41. राम भक्ति-साहित्य में मानव-मूल्य
देविन्दर सिंह 342

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज और राम

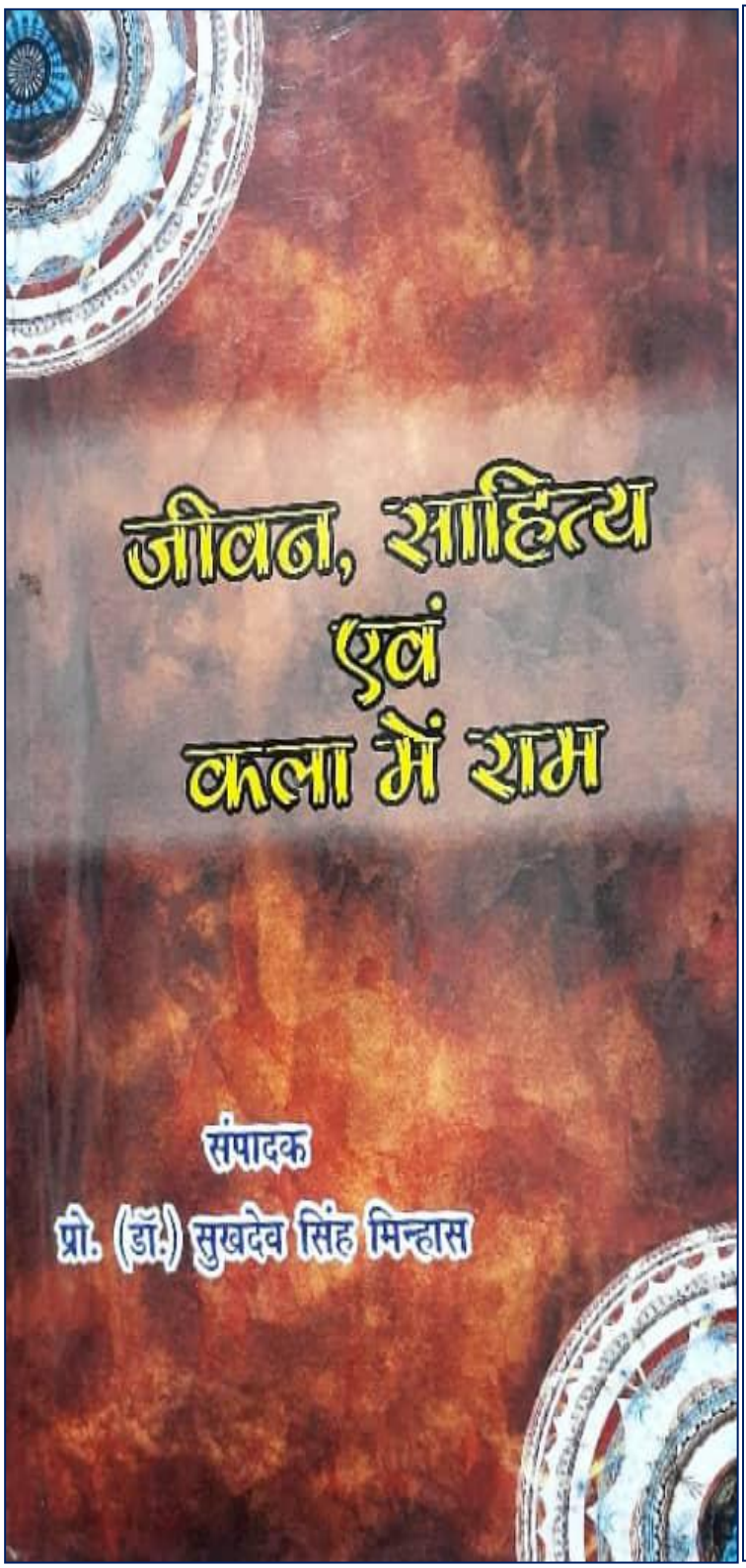

ISBN : 978-81-86400-346-x

© : संपादक

प्रकाशक : निर्मल पब्लिकेशन्स्
ए-130, गली नं. 3,
कबीर नगर, दिल्ली-110094
मोबा. : 0-9350295129

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 1100.00 रुपए

शब्दांकन :
अमर कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110053

मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रैस, दिल्ली-110032

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

संवेदना के पथ पर (हाइकु)

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. Of Hindi

Dated: 2018

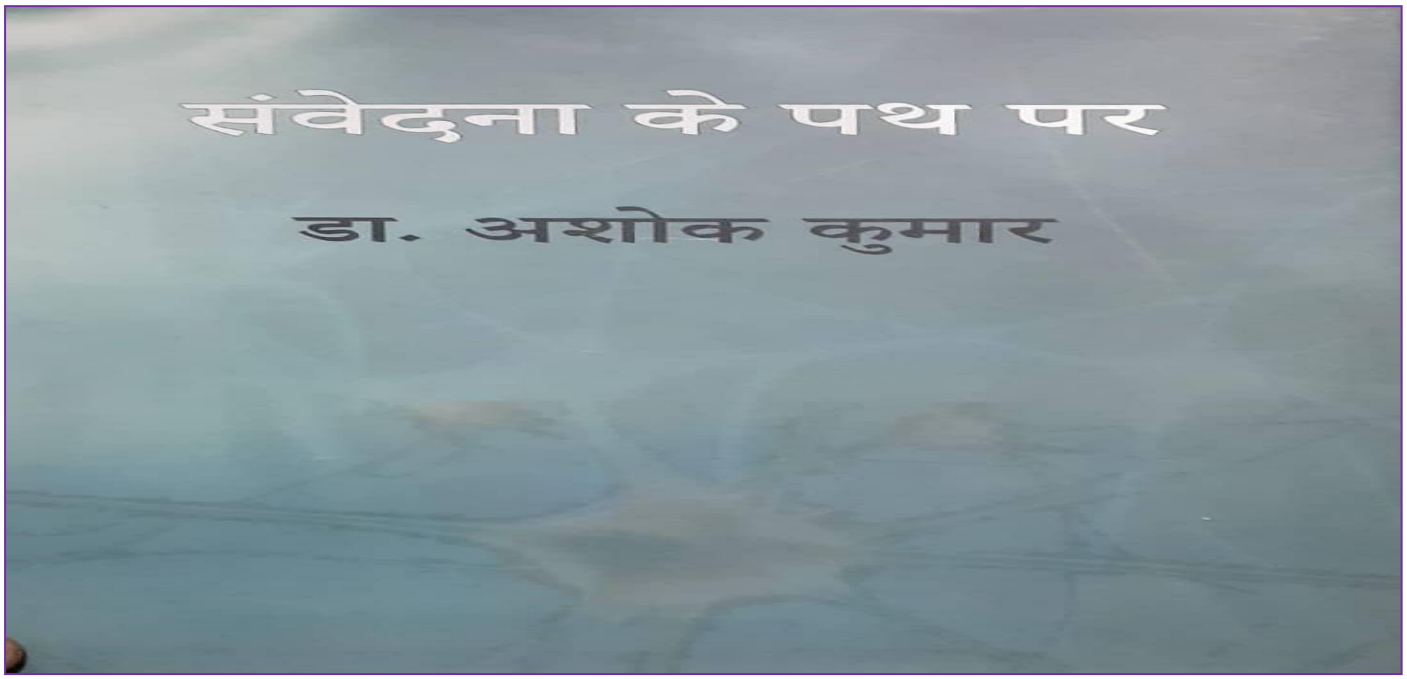

संवेदना के पथ पर
(हाइकु)
First Published Book : 2018

डॉ. अशोक कुमार

Attested
Ashok

के.एल. पचौरी प्रकाशन
☎ 9871649742
9968024740

ISBN 978-81-935889-5-6

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 350.00 रुपये

प्रकाशक :
के. एल. पचौरी प्रकाशन
8/डी ब्लाक, एक्स. इन्द्रापुरी,
लोनी, गाजियाबाद–201102
☎ 9871649742
9968024740

मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रेस, शाहदरा, दिल्ली–32

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

लाहौली संस्कृति में लोक गीतों का महत्व

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi
Dated: 2018

Edited Book : 2018
ISBN 978-93-88583-69-5
Attested
Ashok

लाहौली संस्कृति में लोक गीतों का महत्त्व

डॉ. अशोक कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुल्लू (हि. प्र.) 175101

हिमाचल प्रदेश के पश्चिमी हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य में स्थित जन-जातीय क्षेत्र लाहौल स्पिति क्षेत्रफल की दृष्टि से सब से बड़ा जिला है। हिमाच्छादित पहाड़ विभिन्न प्रकार के फूलों से सुसज्जित, टेढ़ी मेढ़ी पगडंडियों, फसलों से लहलहा रहे खेत, नैसर्गिक सौंदर्य को देखकर यह शीत मरु क्षेत्र स्वर्ग के समान प्रतीत होता है। बर्फबारी के कारण लगभग छः महीने शेष विश्व से अलग होने के कारण यहाँ की सांस्कृतिक सम्पदा के रूप में परम्परा की अमूल्य धरोहर इस शीत मरुस्थल में सुरक्षित है। "लाहौल स्पिति हिमाचल प्रदेश का दूसरा सीमान्त जिला है। दक्षिण में कुल्लू, पूर्व में किन्नौर, उत्तर में लद्दाख और पश्चिम में यह चम्बा से जुड़ा हुआ है।" लाहौल स्पिति में विभिन्न कलाओं जैसे मूर्तिकला, थंका चित्र, वास्तुकला, शिला चित्रण, यहां के विभिन्न मन्दिरों, बौद्ध विहारों और ऐतिहासिक महलों में आज भी सुरक्षित है। इतिहास साक्षी है कि भारत की संस्कृति लोक मानस और व्यवहार में बसती है और इस का कारण यहाँ के समृद्ध लोक जीवन और संस्कृति रही है। "भारतीय शास्त्र की व्याख्या का सर्वोत्तम क्षेत्र यहां का लोक जीवन है। आज भी लोक के जीवन का धार्मिक सत्र उनके मंगलात्मक विधानों और आचारों से सम्पन्न है। लोक में भरे हुए पर्व और उल्लास, लोक नृत्य, लोक गीत, लोक कथाएं, व्रतों की अवदान कहानियाँ संवत्सर का रूप संवारने वाले अनेक व्रत और उपवास देव-यात्राएं और मेले आदि से भारतीय संस्कृति अपना अमित स्पन्दन

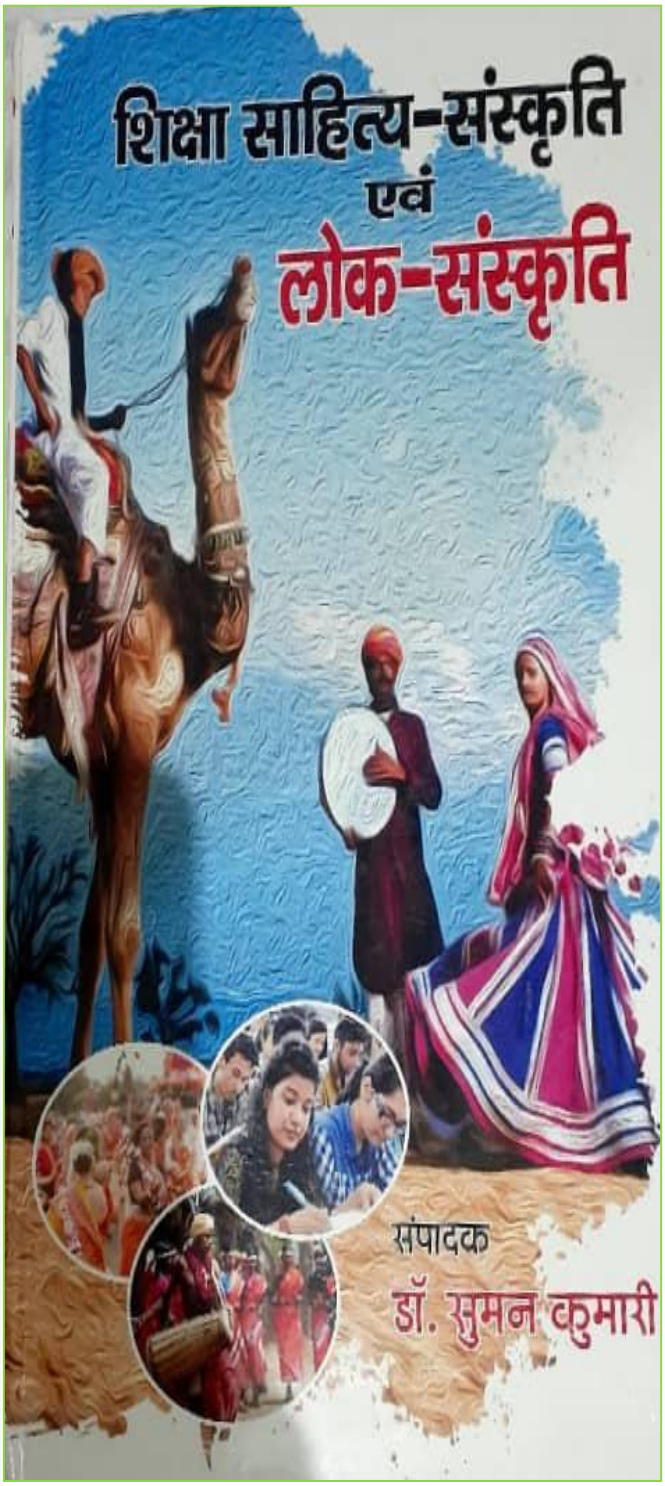

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

लाहौली संस्कृति में लोक गीतों का महत्व

अनुक्रम

याणवी लोकगीतों में फाग प्रतिबिम्बित लोक संस्कृति
डॉ. सुमन कुमारी 9
व व्यवस्था एवं दलित वर्ग
डॉ. मो. अज़ीज मियाँ 17
हौली संस्कृति में लोक गीतों का महत्त्व
डॉ. अशोक कुमार शर्मा 25
दी भाषा और जनसंचार
लता एस. पाटिल 34
ला आँचल' उपन्यास में धर्म का स्वरूप व प्रासंगिकता
इन्दु नारा 38
ाऊँनी लोक-साहित्य में लोकगीतों का महत्त्व
डॉ. मनीषा पाण्डेय 43
ययन अध्यापन में भाषा की उपयोगिता
डॉ. दयाराम 53
' दर्शन में अहिंसा : शैक्षिक परिशीलन
डॉ. गिरधारीलाल शर्मा 57
क साहित्य में नैतिक मूल्य : एक अनुशीलन
डॉ. रणधीर कौशिक 64
तीय संविधान में वर्णित नीति निर्देशक तत्त्व एवं उनके
ान्वयन के श्रेष्ठ उदाहरण : पंचायत, शिक्षा और योजना
शिवकरण निमल 71

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक/संपादक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की हानि वाली क्षति के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

सौजन्य से :-
सरस्वती साहित्य संस्थान (पंजी.)
चरखी-दादरी-127306 (हरियाणा)

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलेक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिकल तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनः प्रकाशन अथवा पुनः मुद्रण, लेखक / प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-88583-69-5

मूल्य : 395/-

प्रथम संस्करण : 2018

© सुरक्षित

प्रकाशक : साहित्यभूमि
(प्रकाशक एवं वितरक)
एन-3/5ए, मोहन गार्डन,
नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7290973151, 8383863238
ई-मेल : sahityabhoomi@gmail.com
लेआउट : कान्सेप्ट पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली

Shiksha Sahitya Sanskriti Avm Lok-Sanskriti
by Dr. Suman Kumari

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

समय से संवाद (काव्य संग्रह)

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. Of Hindi

Dated: 2018

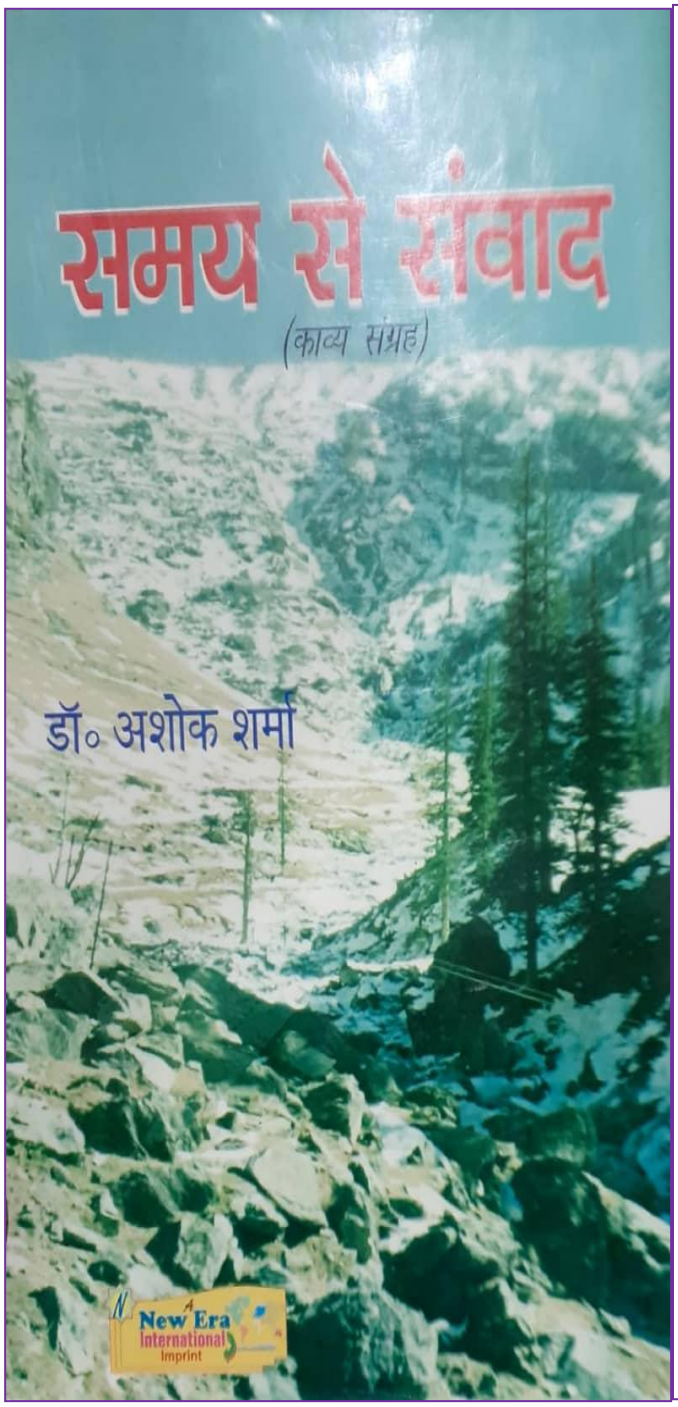

INTERNATIONAL STANDARD BOOK NUMBER (ISBN)
978-81-290-0193-1

समय से संवाद – डॉ॰ अशोक कुमार

First Published: 2018
This Edition/Reprint: 2018

© 2018 Author

All rights reserved. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved, No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system or transmitted, in any form or by any mezns, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of both the copyright owner and the publisher of this book. The views and opinions expressed in this book are the author's own and the facts verified to the extent possible are as reported by the author/s have been reproduced and the publishers in no way are responsible/liable for any affect on account of any expression, whatsoever. Any assertion regarding proprietary name/trademark etc. should not be taken as affecting the legal status of these names/marks.

Printed in India

NEW ERA BOOK AGENCY®
Publisher • Distributor • Exporter & Orders Supplier
SCO 49-51, SECTOR - 17 C, POST BOX - 52
CHANDIGARH - 160 017 (INDIA)

Sales/Liaison/Warehouses-Godowns/Stokists/Distributors/Branches

New Delhi➢Bengaluru➢Hyderabad➢Cochin➢Goa➢ Guwahati➢Derabassi➢Austraila➢Canada
Austraila- 3/62, Canterbury Road, Hurlstone Park, NSW 2193 *(email: neapen.aus@gmail.com)*
Canada- 1009, Algonquin Avenu, North Bay, Ontario - CA, P1B 4X9 *(email: neapen.ca@gmail.com)*

www.neweraintemational.com

EMAIL
neimprint@gmail.com

₹ 325/-

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Changing Dimensions of Globalization and Opportunities for India in Current Socio-Economic World Order

By: Babli Joshi Deptt. of Sociology & Dr.Dinesh Singh Deptt. of Commerce

Dated: 2019

Chapter 6

Changing Dimensions of Globalization and opportunities for India In Current Socio-Economic World Order

Dr. Dinesh Singh & Babli Joshi

Abstract

The concept of Globalization rests upon the premises of free flow of capital, opening up of the economy to foreign investment, cutting down the import duties, free movement of the people and ideas across national boundaries. Under the process, India has also opened up its economy to link it to the other economies of the world, so as to reap the dividends of globalization. The process of Globalization has inflicted both the positive and negative bearings upon India as an economy and society. Since past some years some anti globalization ideas are increasingly surfacing up. The notion upon which the whole of the ideas of globalization was based upon is shaking up. The countries across the globe are adopting selectivism and protectionism. The cultural intolerance seems all time high, the political interference and unbalanced regional growth is quite visible on world stage.

CONTENTS

Forword 5
Preface 7
About the Contributors 11
Chapter 1
Proliferation of Sports and Industries around the Globe . 13
Chapter 2
Globalisation and the Issue of Environment 22
Chapter 3
Impact of Privatization on Higher Education in Himachal Pradesh 35
Chapter 4
Impacts of Globalisation on the Himalayas; with special reference to the Western Himalayan Region 54
Chapter 5
Globalization and English Language 64
Chapter 6
Changing Dimensions of Globalization and opportunities for India In Current Socio-Economic World Order 74
Chapter 7
The Political economy of the waste generation and recycling in Himalayas in a Globalized World 87
Chapter 8
Globalisation in India: Trends and Contemporary Issues 96
Chapter 9
Globalisation and the Issue of Global Health 108
Chapter 10
Globalization and Emerging India 123

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Changing Dimensions of Globalization and Opportunities for India in Current Socio-Economic World Order

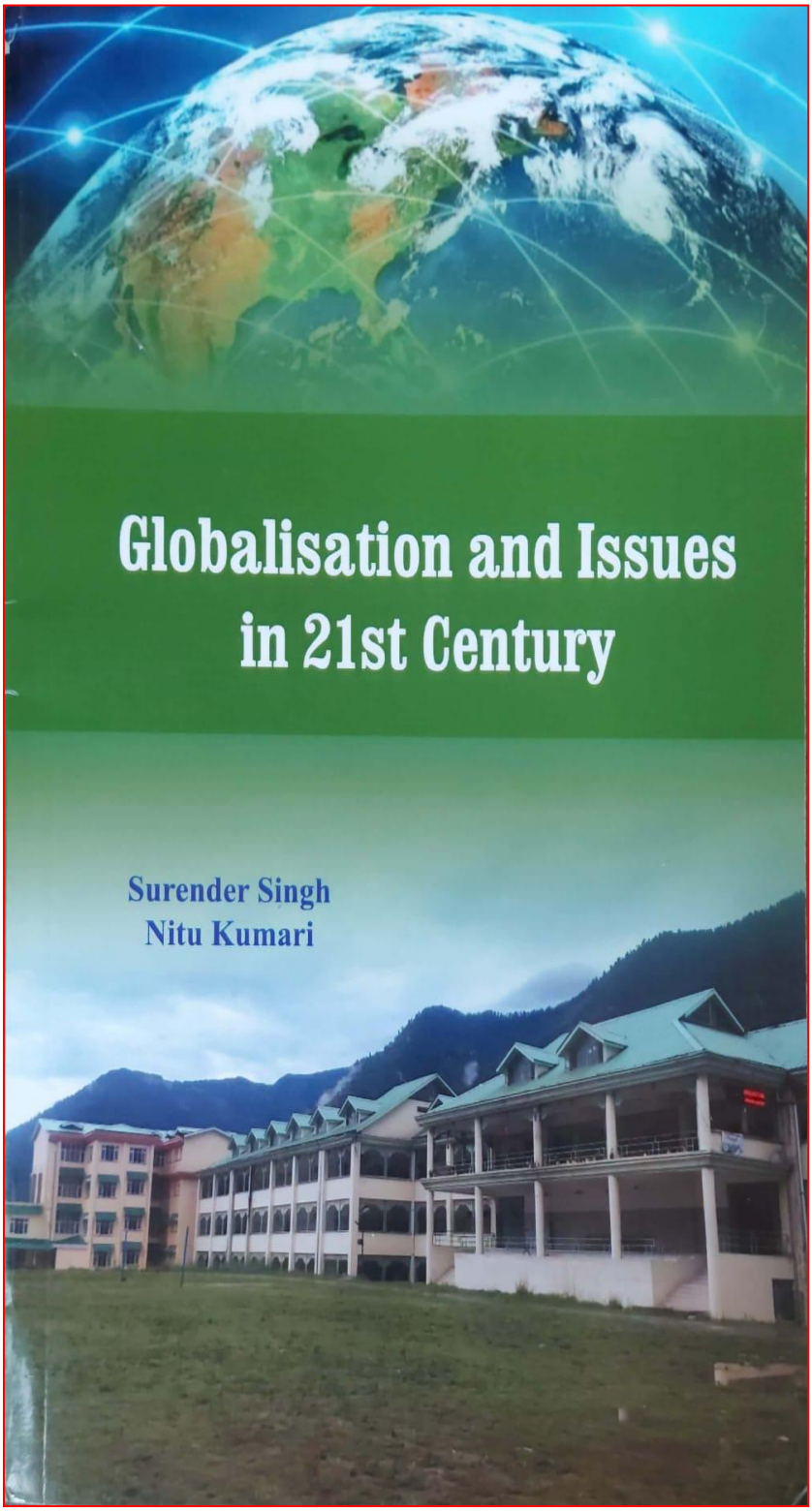

Globalisation and Issues
in 21st Century

Surender Singh
Nitu Kumari

©Author

First Edition 2019

ISBN: 978-93-88928-40-3

Price: ₹ 400/-

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner.

Circulation & Distribution Office:

Brown Books
Opposite Blind School, Qila Road,
Shamshad Market, Aligarh (U.P.) 202002
Mobile: +91- 9818897975, Phone: 0571- 2700088
E-mail:bbpublication@gmail.com
Website:www.brownbooks.in

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय कृषक और हिंदी उपन्यास

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi
Dated: 2019

Self Attested

Published 2019 — Edited Book

भारतीय कृषक और हिन्दी उपन्यास

–डॉ. अशोक कुमार शर्मा

किसी भी राष्ट्र में किसान उस देश की अर्थ व्यवस्था के धुरी होते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था "भारत का हृदय गांवों में बसता है, गांवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति सम्भव है। गांवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार कृषक रहते हैं। लेकिन भारतीय किसानों के जीवन की त्रासदी रही है कि स्वतन्त्रता से लेकर आज तक इनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। अन्नदाता कहे जाने वाले कृषक अतिवृष्टि–अनावृष्टि, अकाल, पाले की मार आदि कई कारणों से आत्महत्या के लिए विवश है। मुगल और ब्रिटिश काल में भारतीय कृषक तत्कालीन शासकों, सामन्तों, जमींदारों के अत्याचार एवं लगान से परेशान थे। आजादी के पश्चात् किसानों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।" 1950 के दशक में एकूल घरेलू उत्पादन में कृषि क्षेत्र का योगदान जहां 50 प्रतिशत था, अब 2017–18 में करीब 16.4 प्रतिशत रह गया।"[1] मुंशी प्रेमचन्द ने "गोदन" उपन्यास में किसानों की समस्या को ऐसे सामाजिक परिपेक्ष्य में चित्रित किया है कि वे अपने राग–विराग, त्याग–स्वार्थ, सत्य–असत्य, भोलेपन आदि के द्वन्द्व में पाठकों के मन में सहानुभूति उत्पन्न कर कृषकों की त्रासदी को बड़े सामाजिक यथार्थ की पहचान कराते हैं। उपन्यास के आरम्भ में होरी अपनी पत्नी धनिया से कहता है "जब दूसरों के पांवों तले अपनी गर्दन दबी हुई हो तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है।"[2] प्रेमचन्द द्वारा रचित तीन उपन्यास 'प्रेमाश्रम', कर्मभूमि और 'गोदान' उपन्यास में होरी को भारत के सभी गांवों के किसानों का प्रतिनिधि माना जा सकता है। होरी की गाय पालने की इच्छा प्रत्येक किसान की इच्छा है। भारतीय किसान खेती को मरजाद समझता है, इसकी अभिव्यक्ति होरी की इस उक्ति से हो जाती है। "हमी को खेती से क्या मिलता है? जो दस रुपए महीने का भी नौकर है वह भी हम से अच्छा खाता पहनता है। लेकिन खेतों को तो छोड़ा नहीं जाता, मरजाद भी तो पालना पड़ता है।"[3]

लेखक

क्र. आलेख

1. शुभाशीष — डॉ. नरेश सिहाग — पृष्ठ

2. सम्पादकीय — सुशील कुमार — 6–6

3. किसान, सरकार और मीडिया — नरेश कुमार — 7–9

4. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में कृषि संस्कृति — 10–13

5. हमारे देश में किसानों की स्थिति — डॉ. तोजेन्द्र भाटिया — 14–24

6. डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी' के उपन्यासों में "किसान विमर्श" के विविध परिदृश्य — डॉ.लता एस.पाटिल — 25–26

7. इक्कीसवीं सदी में किसान — डॉ. नरेश सिहाग — 27–31

8. भारतीय कृषक और हिंदी उपन्यास — डॉ.विजय कुमार — 32–38

9. किसान विमर्श (गोदान के विशेष संदर्भ में) — डॉ. अशोक शर्मा — 39–44

10. कृषक जीवन पर आधारित मार्कण्डेय की कहानियाँ — डॉ. डिम्पल — 45–51

11. किसानों की स्थिति — डॉ० हिमानी त्रिपाठी — 52–56

12. किसान जीवन और पंकज सुबीर कृत उपन्यास 'अकाल में उत्सव' — चन्द्र प्रभा सूद — 57–60

13. वेदों में वर्णित कृषि की आधुनिक उपयोगिता — सुरजीत कौर — 61–69

14. राजीव कृत 'फाँस' उपन्यास में किसान–जीवन की त्रासदी — राहुल शर्मा — 70–79

15. वेदों में कृषि की वैज्ञानिक पद्धति — पूनम पाथा — 80–85

16. हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श में विविध स्वर — संदीप शर्मा — 86–89

17. नई सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान — अमित कुमार गुप्ता — 90–93

18. वेदों में कृषि विज्ञान आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में — शाजिया बशीर — 94–10

… जनजाति गद्दी : — गोपाल शर्मा — 105–1

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय कृषक और हिंदी उपन्यास

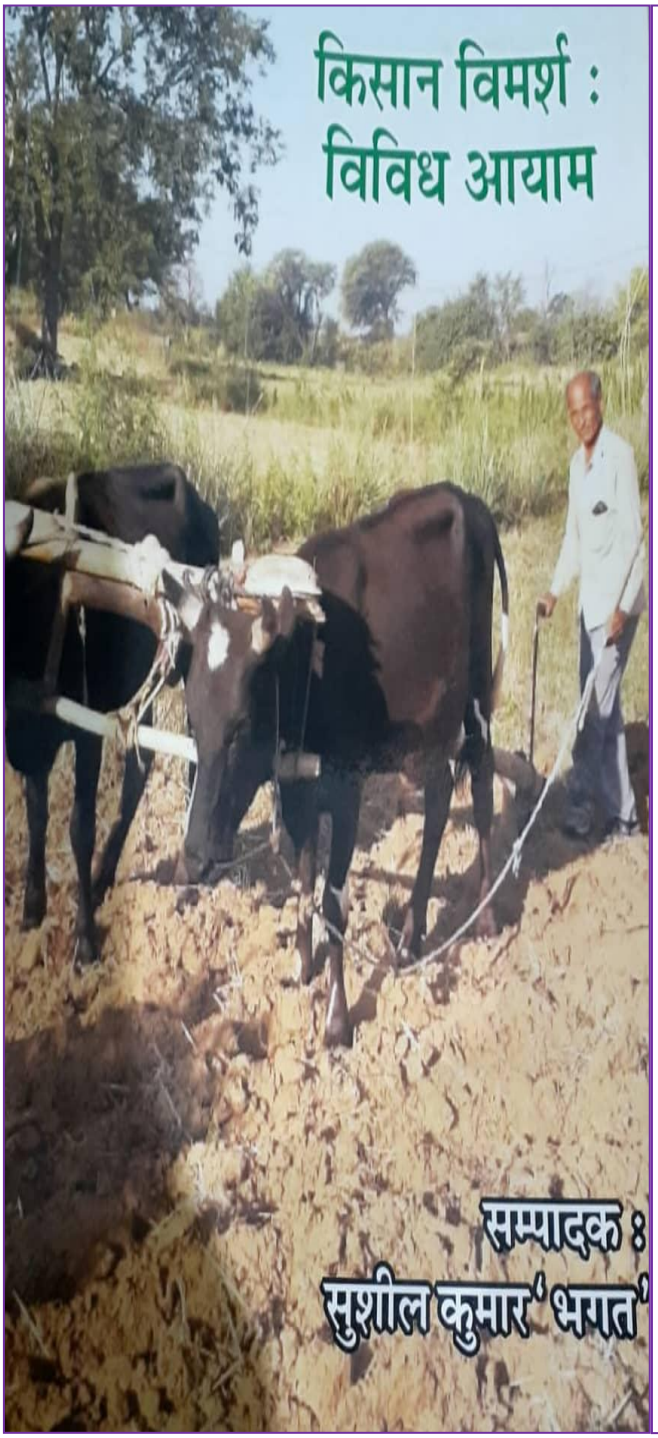

किसान विमर्श : विविध आयाम

ISBN - 978-81-936150-5-8

संस्करण : 2019

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : ginapk222@gmail.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price : 500/-

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, B

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

लोक साहित्य वैश्विक परिप्रेक्ष्य में

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi

Dated: 2019

ISBN 978-81-935889-5-6

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 350.00 रुपये

प्रकाशक :
के. एल. पचौरी प्रकाशन
8/डी ब्लाक, एक्स. इन्द्रापुरी,
लोनी, गाजियाबाद-201102
☎ 9871649742
9968024740

मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-32

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

लोक साहित्य वैश्विक परिप्रेक्ष्य में

Attested

1

Edited Book 2019

लोक साहित्य वैश्विक परिप्रेक्ष्य में

साहित्य और संस्कृति किसी भी राष्ट्र की सुसभ्यता और समृद्धि के यथार्थ सूचक होते हैं। विराट व्यक्तिगत एवं सामूहिक लोक चेतना की आत्मिक शक्ति में ही लोक संस्कृति की और मंगल का अनुष्ठान निहित होता है। लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति की व्यापकता भारतीय जनमानस की वह चेतना है जो अमानवीयता और नैराश्य को दूर कर मानव जीवन को उसके लक्ष्य पथ तक पहुंचाती है। संस्कृति किसी वर्ग विशेष की सम्पत्ति न हो कर सत्य की साधना, सहजता, मानव मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति, जीवन सौन्दर्य की सर्जना का नाद सशक्त एवं स्पष्ट रूप से मुखरित होता है। साधारण अर्थों में संस्कृति शब्द का प्रयोग 'सुसंस्कृत' अथवा 'संस्कार' के अर्थ में किया जाता है। "साहित्यिक, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अर्थों में संस्कृति शब्द का प्रयोग शिक्षण–प्रशिक्षण से प्राप्त सामाजिक शिष्टता, बौद्धिक उत्कर्ष, नैतिकता, मधुरता तथा कुछ अन्य विशिष्ट लक्षणों के लिए किया जाता है। इन सभी धारणाओं में प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप में मूल्यांकन अर्थात अच्छे बुरे का भाव निहित है। संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है जिस में ज्ञान, विश्वास, कलाएं, नैतिकता, विधि प्रथाएं और वे सभी योग्यताएं एवं क्षमताएं सम्मिलित की जाती है जिन्हें समाज के एक सदस्य के रूप में मानव अर्जित करता है।"[1]

लोक संस्कृति में इतिहास संस्कृति और सभ्यता के वे बिन्दु होते हैं जो उस काल तथा समाज विशेष की सृजनात्मक भावना की पहचान बन जाती है। लोक संस्कृति एक मनुष्य की सम्पति न होकर सम्पूर्ण समाज की सामाजिक, धार्मिक, भौतिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक मान्यताएं, विश्वास और मूल्य जो उस समाज की सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं "लोक शब्द का अर्थ 'जानपद' या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरों और गावों में फैली हुई वह समस्त जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं। ये लोग नगर में

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भटियात वन आंदोलन:संघर्ष व चुनौतियाँ

By: Dr Ursem Lata Deptt. of Hindi

Dated: 2020

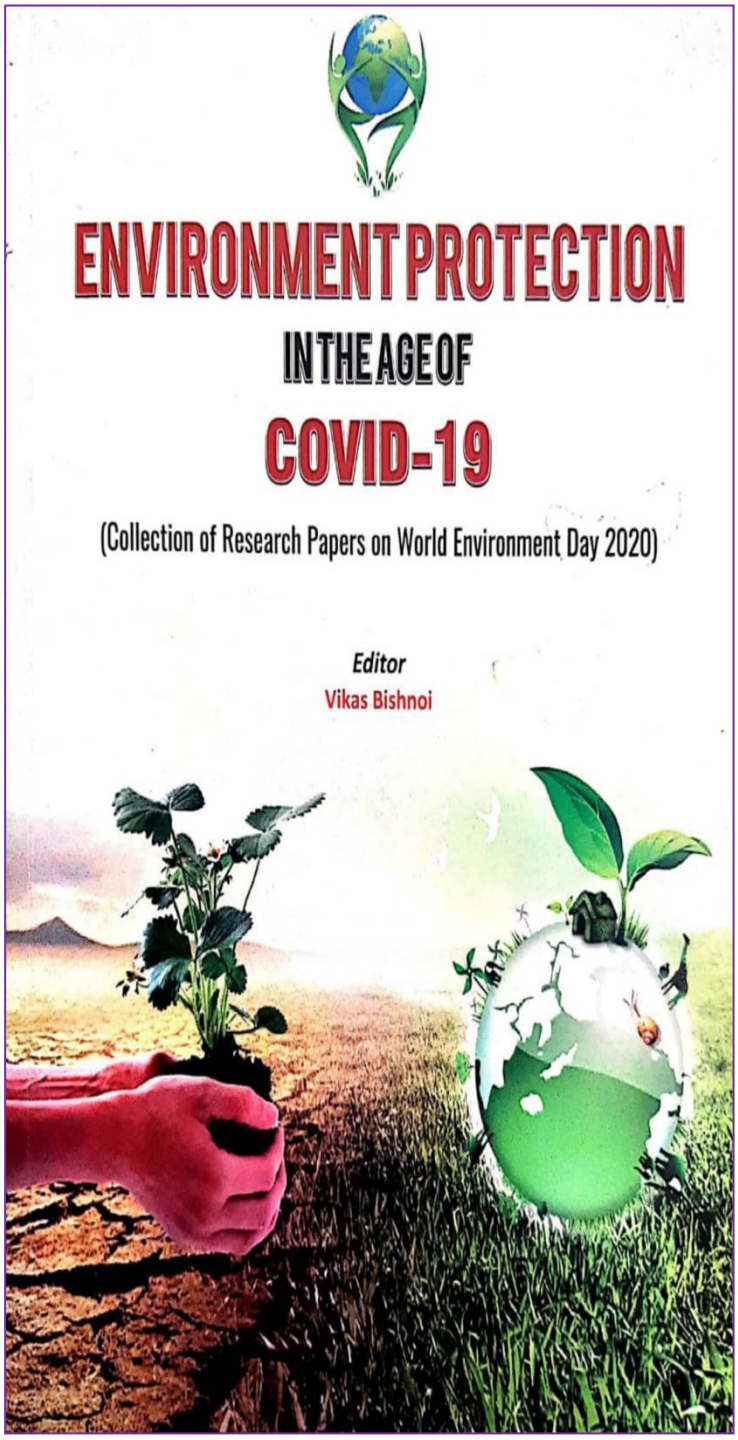

Environment Protection in the Age of COVID-19 (Sept., 2020), 78-85

भटियात वन आंदोलन : संघर्ष व चुनौतियां

डॉ. उरसेम लता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कुल्लू (हि.प्र.)
E-mail: ursemlata3@gmail.com

प्रकृति और मानव का सृष्टि की शुरूआत से ही परस्पर जुड़ाव रहा है। आदिम समय से ही मनुष्य की निर्भरता प्रकृति पर रही है। कल्पना की जा सकती है कि किस तरह आदिमानव ने प्रकृति प्रदत उपहारों से सभ्यता की शुरूआत की होगी और सभ्यता के नए-नए डग भरते हुए मानव ने अपनी रूचियों को परिष्कृत करते हुए संस्कृति का निर्माण किया होगा। इस तरह प्रकृति मनुष्य जीवन का अहम हिस्सा थी और आरम्भिक युग में मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सामंजस्य पर आधारित रहा होगा, जो नि:सन्देह काफी देर तक चलता भी रहा परन्तु धीरे-धीरे बदलती दुनिया में 'व्यक्तिगत सम्पत्ति' के बढ़ते महत्व ने मनुष्य के सम्बन्धों को प्रभावित करना शुरू कर दिया, इस तरह अतीत का वह सामंजस्य टूटने बिखरने लगा और प्रकृति को वश में करने की इस लालसा ने पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

धीरे-धीरे यह सम्बन्ध इतने जटिल हो गए कि वैयक्तिकता, स्वार्थपरता, लोलुपता के साथ-साथ सत्ता पर बैठी सरकारों की जन विरोधी नीतियों ने प्रकृति को मनुष्य के हाथ का खिलौना बना दिया। जीवन शैली जो हजारों वर्षों से प्रकृति व मनुष्य के सामंजस्य से चली आ रही थी, अस्त व्यस्त होने लगी। इस तरह एक के बाद एक समस्याएं खड़ी होने लगी और सरकार व स्थानीय लोगों के नजरिये में फर्क नजर आने लगा जो अलग-अलग क्षेत्रों में जन आंदोलन के रूप में उभरने लगा। जिन भी क्षेत्रों में आमजन जागृत हुआ, उसने अपने-अपने क्षेत्रों में जनचेतना जगाने का कार्य किया और लम्बी-लम्बी लड़ाईयां लड़ने के उद्देश्य से आंदोलन शुरू किए। बिश्नोई आंदोलन, चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन, साइलेंट घाटी आंदोलन, जंगल बचाओ आंदोलन, नर्मदा बचाओ, टिहरी बांध विरोध जैसे कुछ महत्वपूर्ण आंदोलनों के बारे में मुख्य रूप से चर्चा हुआ करती है।

इसी तरह का एक आंदोलन हिमाचल के 'भटियात' में भी उभरा जिसे 'भटियात वन आंदोलन' के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन की जरूरत क्यों

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भटियात वन आंदोलन:संघर्ष व चुनौतियाँ

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा
मोहिंदर सिंह राही 68-73

वृक्षों को आध्यात्मिक एवं दैवीय प्राणी का दर्जा देने वाले पहले सदगुरु देव श्री जाम्भोजी महाराज
हरितऋषि विजयपाल बघेल 74-77

✓भटियात वन आंदोलन: संघर्ष व चुनौतियां
डॉ. उरसेम लता 78-85

इस्लाम और पर्यावरण
डॉ. मोहसिन खान 86-93

महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के साहित्य में प्रकृति
डॉ. निबेदिता नाथ 94-100

संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण नीतियाँ
नन्दादुलाल मण्डल 101-106

नैतिक प्रदूषण
डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता एवं डॉ. धीरज वर्मा (सोनी) 107-114

पर्यावरण और विधि
डॉ. नरेश सिहाग 115-120

वसुंधरा की रक्षा के लिए लॉकडाउन जरूरी
डॉ. दयानंद उजळंबे 121-124

पर्यावरण संरक्षण में योग की भूमिका
मनोज बिश्नोई 125-130

भारतीय आस्था में पर्यावरण अभिरूचि: एक ऐतिहासिक विश्लेषण
विमल कुमार तिवारी 131-136

पर्यावरण दिवस 2020 पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (वेबिनार) आयोजित 137-140

Collection of Research Papers at
Three Days International Conference by
THE BISHNOIS RESEARCH FORUM

ENVIRONMENT PROTECTION IN THE AGE OF COVID-19

Editor :
Vikas Bishnoi

Publisher :
Gina Prakashan
Bhiwani, Haryana (INDIA)

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

वैश्विक साहित्य और समाज

By: Dr. Ursem Lata Deptt. of Hindi
Dated: 2020

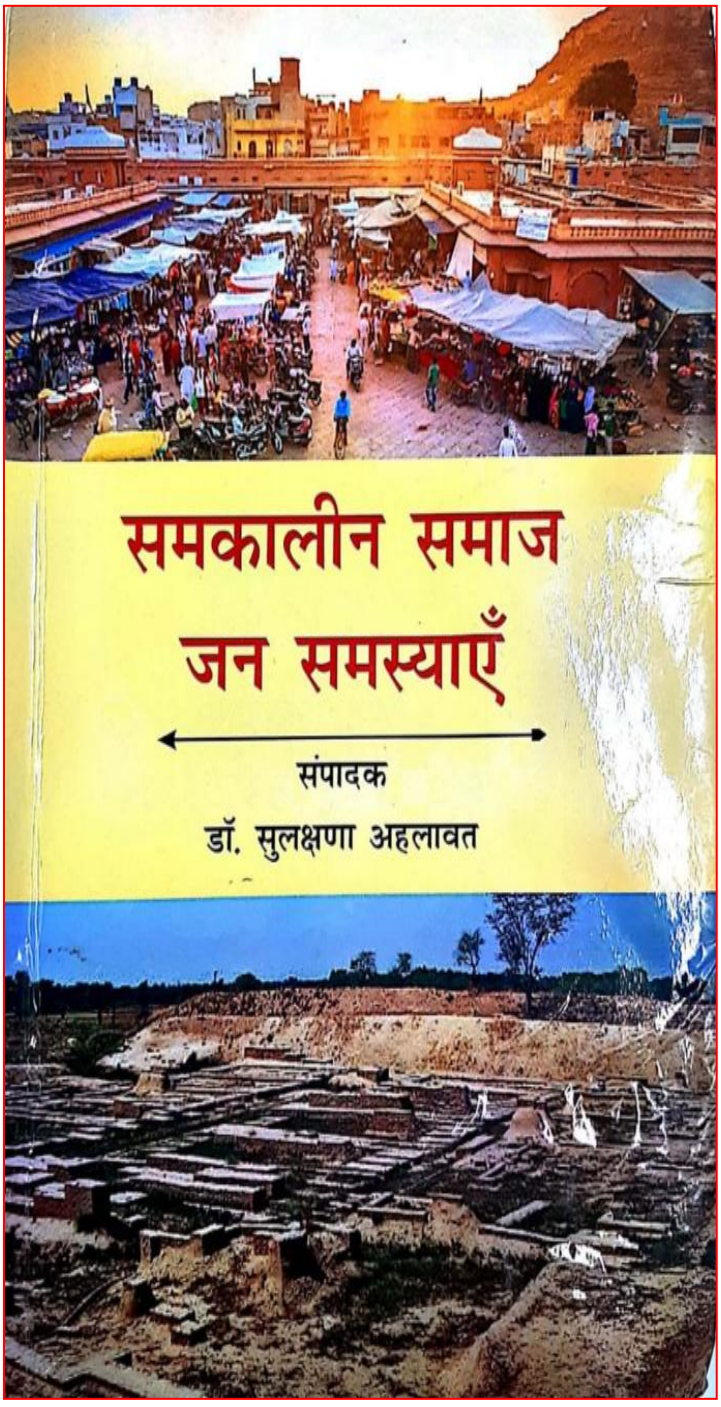

वैश्विक साहित्य और समाज

डॉ. उरसेम लता
एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय कुल्लू।
Email ursemlata3@gmail.com

कितने ही खांचों में बंटा होता है मनुष्य तब तक, जब तक किताबों से उसका रिश्ता कायम नहीं होता या फिर किताबें न सही दुनियां को ही पढ़ना नहीं सीखता वह। कहने का अर्थ यह है कि हम खुली आंखों के होते हुए भी अपने परिवेश, देश-दुनियां के प्रति उदासीन रहते हैं- बंटे ही रहते हैं कई-कई खांचों में। ताज्जुब तब होता है जब पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह उदासीनता हस्तांतरित होती चली जाती है और उन बंटे हुए खांचों में जनम लेकर हम उसी में उसी के लिए मर जाते हैं और इस तरह उसी में जीने-मरने के लिए अगली पीढ़ी भी अभिशप्त हो जाती है।

यह खांचे तब टूटते हैं जब हमारा रिश्ता किताबों या फिर अपने परिवेश को पढ़ने, समझने विचार-विमर्श करने से जुड़ता है। तब अनायास ही सब खांचे एक-एक कर टूटने लगते हैं। यह है ताकत साहित्य की, जो सभी विभाजनों को तोड़ती है। वर्ग संघर्ष की चेतना पत्रिका 'सर्वनाम' के सौंवे अंक में छपे लेख 'साहित्य से क्या होता है?'-में दक्ष कहते हैं कि- "यदि आप साहित्य से क्रान्ति नहीं ला सकते हैं तो अपने समसामायिक दबावों के विरोध में क्या चीख भी नहीं सकते? इतिहास इस बात का गवाह है कि साहित्य आवश्यकता पड़ने पर ललकार से चीख तक बना है। ललकार और चीख के बाद भी बहुत कुछ शेष रहता है और वह जैसे होता है वैसे ही हो सकता है।"[1]

उपरोक्त लेख जहाँ एक ओर साहित्य के प्रयोजन का उल्लेख करता है वहीं समाज में साहित्य की क्या भूमिका है, पर भी अपनी बात को स्पष्ट करता है। एक साधारण सी कलम से सत्ता किस कदर डरती है, व्यवस्था किस तरह एक निहत्थे कलाकार को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मान हर तरह के हथकण्डे अपनाकर उसे खामोश करना चाहती है- यह किसी से छुपा नहीं है। 'नान्दीपाठ' पत्रिका के अंक

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

वैश्विक साहित्य और समाज

22. 'तार सप्तक' में समाज परिवर्तन — 149
रंजना पाण्डेय
23. समाज एवं साहित्य के आइने में किन्नर व्यथा — 154
साक्षी शर्मा
24. कोरोना समस्या एवं समाधान — 164
डॉ॰ सलोनी
25. समाज में जाति एक समस्या — 172
संतराम
26. विभाजन की त्रासदी के बाद निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति : संदर्भ 'फाँस' — 181
सपना रानी
27. मानवाधिकार — 188
सरला कुमारी
28. मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का छात्रों व भारतीय शिक्षा पर प्रभाव — 192
सुशील कुमार
29. साहित्य और समाज — 198
डॉ. तरुणा दाधीच
30. वैश्विक साहित्य और समाज — 204
डॉ. उरसेम लता
31. धर्मशास्त्रीय एवं नीतिशास्त्रीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण: पर्यावरण संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में — 209
डॉ॰ विशाल भारद्वाज
32. 'कोरोना वायरस' लॉकडाउन के सकारात्मक पक्ष — 216
डॉ. श्रवण कुमार खोड़ा
33. भारत में सामुदायिक रेडियो की अवधारणा एवं प्रासंगिकता — 223
हर्षवर्धन पाण्डे / सुनील भारती

प्रधान कार्यालय :
गीना प्रकाशन
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
मोबाइल : 9466532152, 8708822674
ई-मेल : ginapk222@gmail.com

व्यवस्थापक गीना प्रकाशन ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली से पुस्तक प्रकाशित करवाकर मुख्य कार्यालय से वितरित की।

ISBN : 978-93-89047-24-0

© : लेखक

मूल्य : ₹ 700 /-
प्रथम संस्करण : सन् 2021
प्रकाशक : सानिया पब्लिकेशन
323, गली नं. 15,
कर्दमपुरी एक्सटेंशन,
दिल्ली-110094
मोबाइल : 8383042929
email : saniapublicationindia@gmail.com
आवरण : एम. सलीम
शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094
मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Samkaleen Samaj : Jan Samasyay
Edited by Dr. Sulakshana Ahlawat

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

आधुनिक साहित्य चिंतन

By: Dr.Ashok Kumar Deptt. of Hindi

Dated: 2020

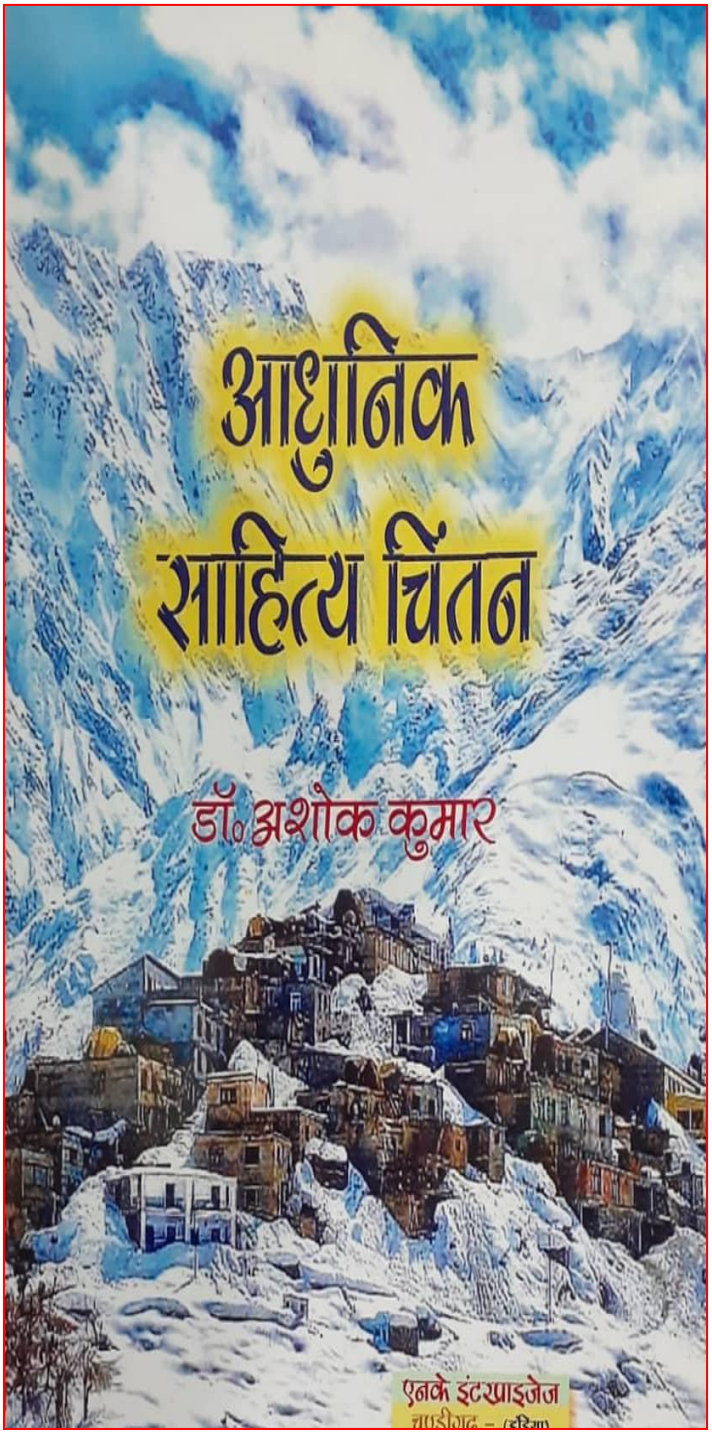

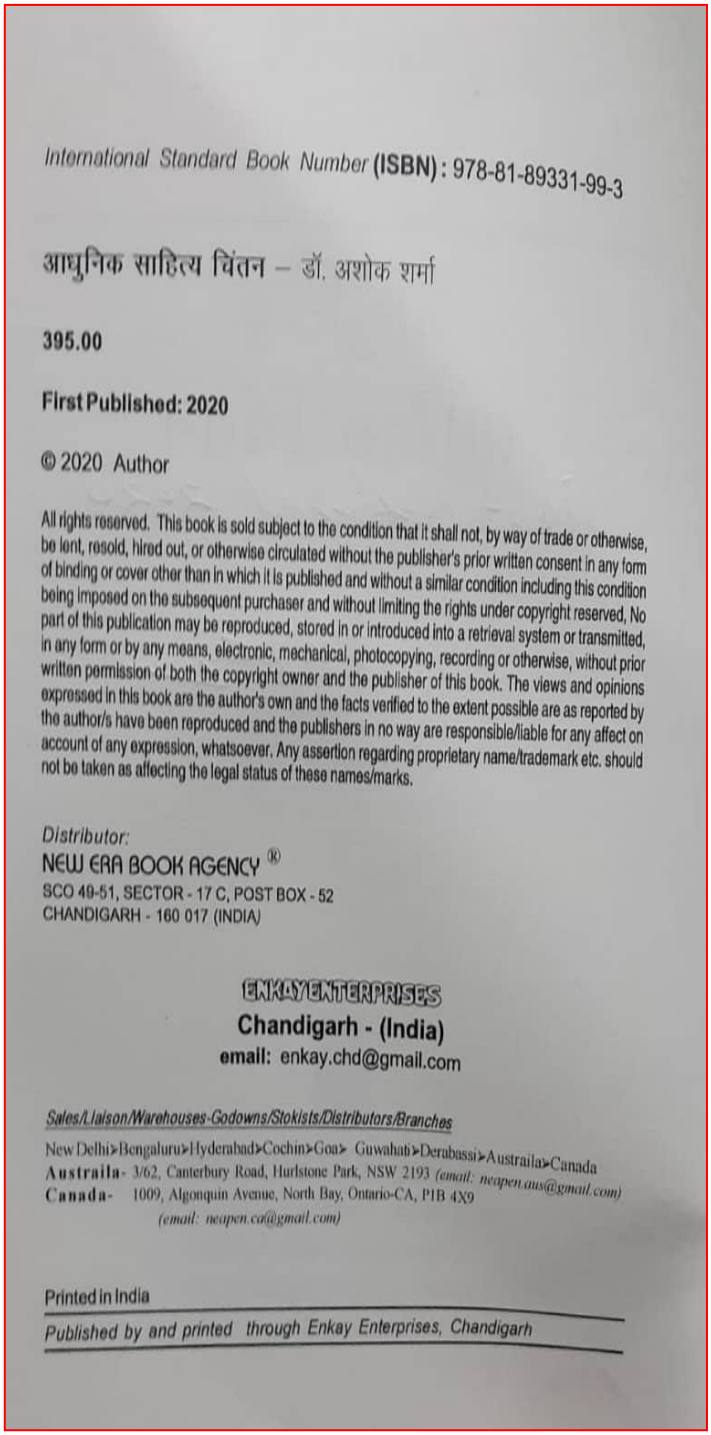

International Standard Book Number **(ISBN)**: 978-81-89331-99-3

आधुनिक साहित्य चिंतन – डॉ. अशोक शर्मा

395.00

First Published: 2020

© 2020 Author

All rights reserved. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved, No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of both the copyright owner and the publisher of this book. The views and opinions expressed in this book are the author's own and the facts verified to the extent possible are as reported by the author/s have been reproduced and the publishers in no way are responsible/liable for any affect on account of any expression, whatsoever. Any assertion regarding proprietary name/trademark etc. should not be taken as affecting the legal status of these names/marks.

Distributor:
NEW ERA BOOK AGENCY ®
SCO 49-51, SECTOR - 17 C, POST BOX - 52
CHANDIGARH - 160 017 (INDIA)

ENKAYENTERPRISES
Chandigarh - (India)
email: enkay.chd@gmail.com

Sales/Liaison/Warehouses-Godowns/Stokists/Distributors/Branches

New Delhi>Bengaluru>Hyderabad>Cochin>Goa> Guwahati>Derabassi>Australia>Canada
Australia- 3/62, Canterbury Road, Hurlstone Park, NSW 2193 *(email: neapen.aus@gmail.com)*
Canada- 1009, Algonquin Avenue, North Bay, Ontario-CA, PIB 4X9
(email: neapen.ca@gmail.com)

Printed in India

Published by and printed through Enkay Enterprises, Chandigarh

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi

Dated: 2020

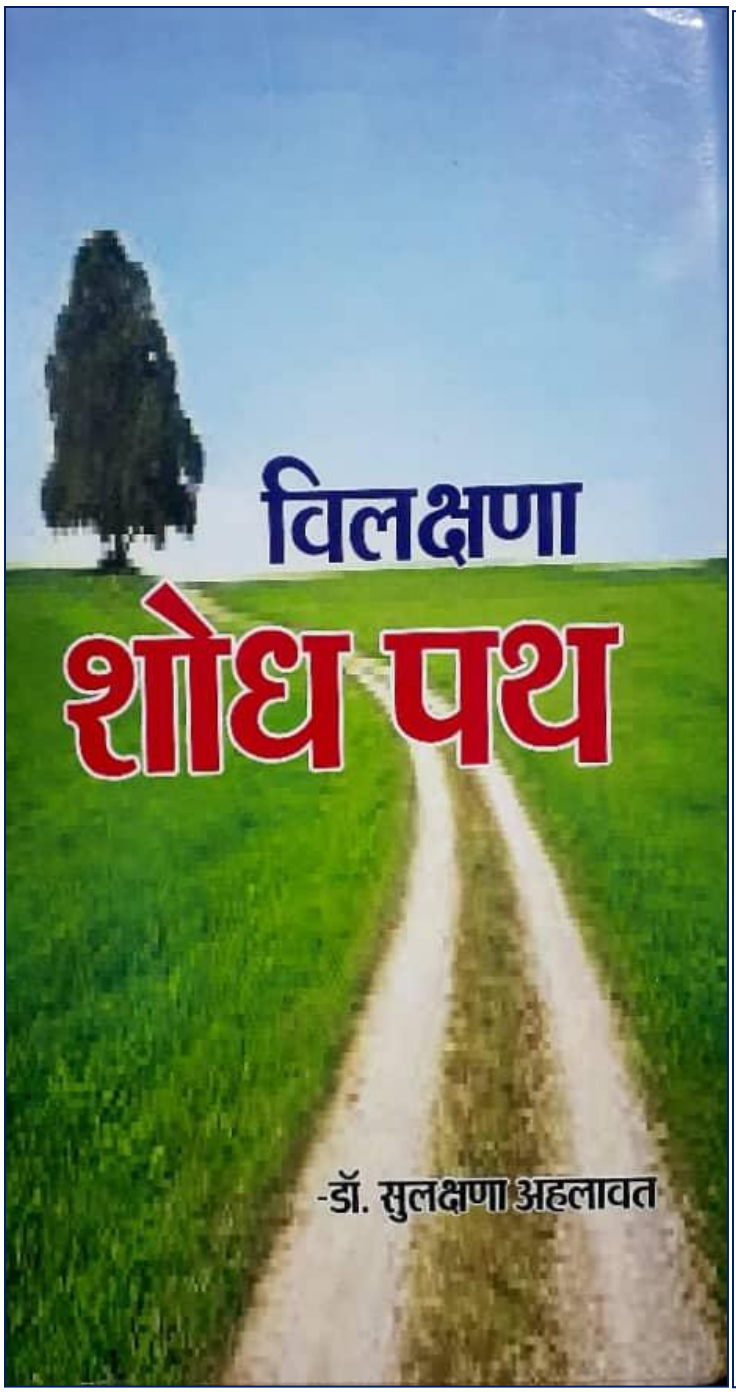

Attested

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना

Edited Book: 2020

डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय कुल्लू हि. प्र

अनादिकाल से मानव को परिपक्व और प्रबुद्ध बनाने के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिदृश्य उस राष्ट्र के शिक्षित जनता की मानसिक चिंतन तथा बौद्धिक क्षमता का आइना होता है। यह उस राष्ट्र की जनता पर निर्भर करता है कि अपने राष्ट्र की तस्वीर कैसे पेश करना है। शिक्षा मानवजाति के लिए विकास का वह क्रम है जिसमें व्यक्ति स्वयं को विभिन्न प्रकार से वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढाल कर नैतिक मूल्यों को अपनाता है। पाश्चात्य विद्वान एडमंड बर्कर ने कहा था "शिक्षा राष्ट्रों की प्रमुख प्रतिरक्षा है अर्थात किसी भी राज्य की प्रतिरक्षा का प्रमुख साधन शिक्षा है।"[1] मानव अपने विकास के क्रम में शिक्षा के महत्व को समझता हुआ ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कृति जैसे नए क्षेत्रों के अनुसंधानों से यह बात समझ में आने लगी थी कि ज्ञान का विस्तार किसी विशेष परिधि में नहीं बाँधा जा सकता।"अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के लिए 'एजुकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के तीन शब्दों- एजुकेटम, एजुकेयरतथा एजुसोयर से मानी जाती है। एजुकेटम शब्द दो शब्दों ई + डयूको से मिल कर बना है जिसमें 'ई' का अर्थ है अन्दर से तथा डयूको का अर्थ है बाहर निकालना अर्थात व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को उजागर करना है। 'एजुकेयर' शब्द का अर्थ है पालन-पोषण करना, सवर्धन व परिष्करण करना, 'एजुसोयर' का अर्थ है प्रेरणा, पथ-प्रदर्शन अर्थात शिक्षा व्यक्ति के जन्मजात गुणों को विकसित करती है।"[2] भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है, इस देश में कभी नालन्दा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में चीन, कोरिया, जापान, सुमात्रा, मलेशिया, श्रीलंका आदि देशों के विद्यार्थियों ने जीवन मूल्यों से युक्त शिक्षा प्राप्त कर पूरी दुनिया को ज्ञान रूपी आलोक से प्रज्ज्वलित किया जो आज इतिहास के पन्नों

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना

अनुक्रम

सम्पादकीय 5

1. नवरत्न पाँडे कृत उपन्यास : 'मुझसा ही कोई मैं' में शैक्षिक विमर्श 11
   रामसिंह
2. कुरु कुरु स्वाहा में भाषा रचना शिल्प उपन्यास 16
   डॉ. अजय. जी. कम्मत
3. आदिवासी समाज : एक विश्लेषण (महाश्वेता देवी के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) 23
   डॉ. लवलीन कौर
4. भारतीय संस्कृति और आदर्श स्थापना 31
   डॉ. हिमा गुप्ता
5. दादूवाणी और सामाजिक समरसता 36
   डॉ. अनिता गुप्ता
6. उपभोक्ता सशक्तिकरण की दिशाएँ 44
   डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप
   रामसेवक राम भगत
7. सूर्यमल्ल मिश्रण व्यक्तित्व एवं कृतित्व 56
   शिवराज सिंह शक्तावत
8. स्त्री-विमर्श का खौलता इतिहास : प्रेमचंद साहित्य के आईने में 66
   डॉ. सिन्धु सुमन
9. भारतीय समाज और राम का चरित्र 76
   डॉ. अमित कुमार दीक्षित
10. 'झूमुर' नृत्य लोक संस्कृति की गाथा : असम के चाय बागान के आलोक में 82
    डॉ. अनुराधा कुमारी साहु
11. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना 88
    डॉ. अशोक कुमार

ISBN : 978-93-89047-21-9

© : लेखिका

मूल्य : ₹ 495/-

प्रथम संस्करण : सन् 2020

प्रकाशक : सानिया पब्लिकेशन
323, गली नं. 15,
कर्दमपुरी एक्सटेंशन,
दिल्ली-110094
मोबाइल : 7292063887

आवरण : एम. सलीम

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Vilakshana Shodh Path

Edited by Dr. Sulakshana Ahlawat

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Untangling Sita; Voicing the Voiceless through Chitra Banerjee Divakaruni's The Forest of Enchantments

By: Charu Ahluwalia, Deptt. of English

Dated: 2021

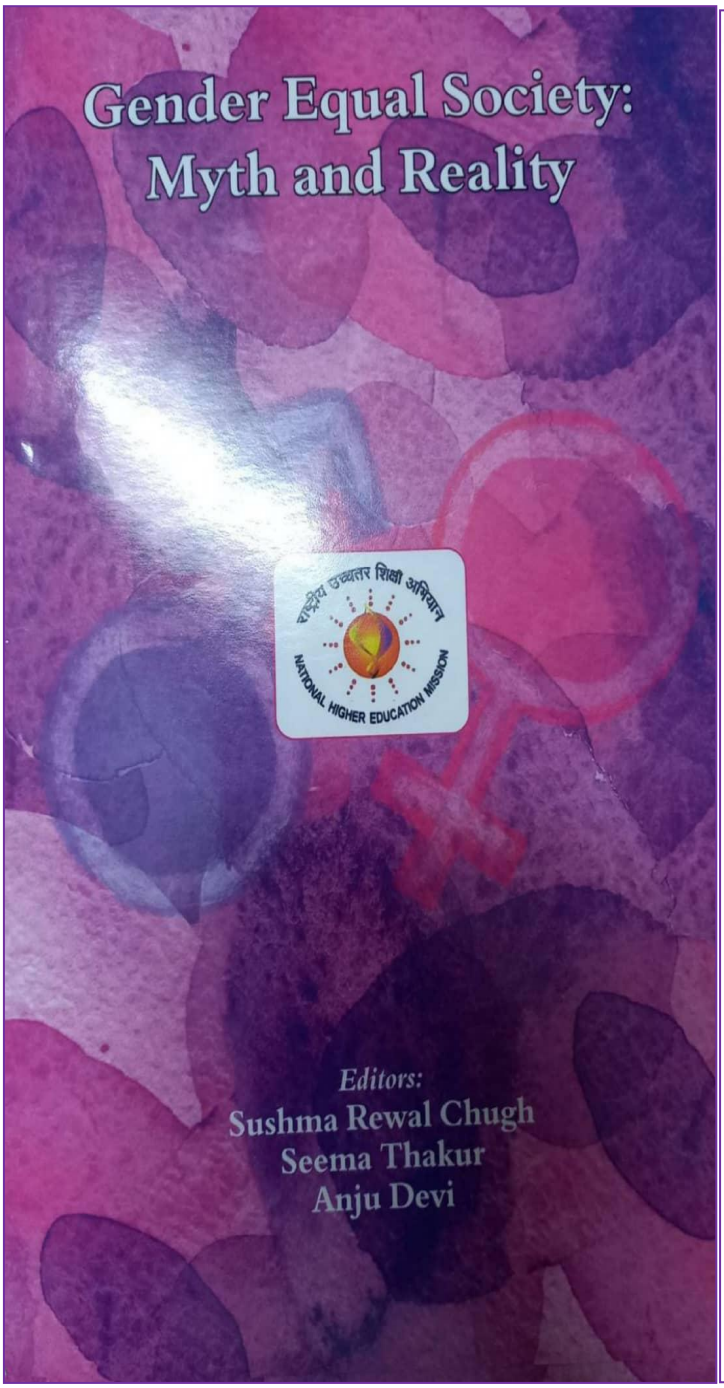

DISCLAIMER
The opinions expressed in this book are personal views of the individual author and in no way reflect the opinion of the Editor. The individual author is solely responsible for the contents in his/her write-up and the Editor takes no responsibility in this regard.

ISBN: 978-81-950618-8-4

© 2021 Centre for Women's Studies & Development
Himachal Pradesh University, Summer Hill,
Shimla-171 005 (Himachal Pradesh) India.

Editors:
Sushma Rewal Chugh
Seema Thakur
Anju Devi

Edition: First Edition 2021

Price: 525.00

Published by: Bansal Publishers
Email: bansalpublishers28@gmail.com
Industrial Area, Phase 1, Chandigarh-16002

Printed by: DGT Graphics, Calm Café Building, Summer Hill,
Shimla-171 005 (Himachal Pradesh) India
Tel.: 0177-2633120

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Untangling Sita; voicing the Voiceless through Chitra Banerjee Divakaruni's The Forest of Enchantments

UNTANGLING SITA: VOICING THE VOICELESS THROUGH CHITRA BANERJEE DIVAKARUNI'S *THE FOREST OF ENCHANTMENTS*

Charu Ahluwalia

Stories have remained an ardent part of human life since the times there have been constellations above and waves in the bosom of the seas. Sagas were created through literature even before literature breathed the fragrance of ink. Centuries old narratives traversed through generations initially in the form of oral traditions and later in the forms of myths and mythologies. In Indian context, female sketch in mythologies specially Ramayana and Mahabharata have put the female protagonist in a faded light and even if she was eulogized as a Devi, it has rendered her to be inarticulate, tacit and a voiceless subordinate to the Devta or the Hero, bereaved of her own uniqueness. The present paper will focus on how the character of Sita, who had skipped the limelight in the ancient texts has actually glimpsed a flicker of hope at the end of tunnel through modern Indian mythic fiction. The paper will try to prove that gender equality was actually a myth in ancient times but it has turned to a reality through the evolving genre of Indian mythic fiction in one of the selected novels of modern Indian mythic fiction writers. The paper will try to prove the feminist aspects of Sita which render her more vocal.

Keywords: Indian Mythology, Ramayana, Sita, Feminism, Indian mythic fiction.

Introduction

This paper wants to illumine the concept of gender equal society: myth and reality. The paper will try to prove that the gender equality which was insubstantial in ancient Indian mythology has actually found resonance through modern Indian mythic fiction. The novel under consideration is "*The Forest of Enchantments*" by Chitra Banerjee Divakaruni. The paper will examine the depiction of Sita in ancient mythological texts and compare it with the text under study. The aim of the paper is to depict transitional change that can be observed in the portrayal of Sita's character from past to present and

❖	Untangling Sita: Voicing the Voiceless through Chitra Banerjee Divakaruni's *The Forest of Enchantments*	Charu Ahluwalia	108
❖	Gender Equality and Women Empowerment	Suman Kumar	115
❖	"Eat me, Drink me, Love me": Female Friendship, Sisterhood, and Sexuality in "Goblin Market"	Ramprasad Dutta	130
❖	Declining Child Sex Ratio in Himachal Pradesh	Hari Singh Chandel Dr. Seema Thakur	137
❖	Role of Media in Public Awareness during COVID-19	Tara Hetta Dr. Sharda Devi	148
❖	Unsettling Subjective Identity in Margaret Atwood's *The year of the Flood*	Anil Kumar Ayushi Sharma	160
❖	Gender Gap in Contemporary World: Ambiguity of Economic Growth and Women's Empowerment in India	Ayushi Sharma Shailja Shakshi Chaudhary	170
❖	Gender Issues in Education	Anju Devi	180
❖	The Indiscernible Heart	Pallavi Bhardwaj	189
❖	A Filtered Perspective: The Ideal of Japanese Women in Texts on Japan from England and Bengal	Ankana Bag	203

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Tourist Destination – Elements and Life Cycle

By: Dr Hira Mani Deptt. of Tourism
Dated: 2021

UNIT 8 TOURIST DESTINATION – ELEMENTS AND LIFE CYCLE

Structure

8.0 Objectives
8.1 Introduction
8.2 Tourist Destination – Concept and Evolution
8.3 Elements of Tourist Destination – 7A
8.4 Destination Life Cycle(Tourist Area Life Cycle)
8.4.1 Exploration Stage
8.4.2 Involvement Stage
8.4.3 Development Stage
8.4.4 Consolidation Stage
8.4.5 Stagnation Stage
8.4.6 Decline Stage
8.5 Tourist Destination Life Cycle Implications
8.5.1 Conceptual Framework
8.5.2 Forecasting
8.5.3 Strategic Planning
8.6 Let Us Sum Up
8.7 Key Words
8.8 Answers to Check Your Progress
8.9 Terminal Questions

8.0 OBJECTIVES

After studying this unit, you should be able to:

- understand the concept and evolution of a tourist destination;
- know the elements of a tourist destination;
- comprehend the meaning of tourist destination lifecycle;
- various stages of destination life cycle; and
- understand the implications of destination life cycle in tourism management.

8.1 INTRODUCTION

In the previous unit, we have learnt about tourism industry, its structure, components, linkages and integrations prevalent in this industry. In present unit we shall be discussing an important component of tourism phenomenon i.e. Tourist Destination. We shall be discussing about the concept of a tourist destination, how a tourist destination evolve over the period of time, what are the components of a tourist destination and destination life cycle and its implications in managing tourism. Every country has many cities, towns or villages but does the tourist visit every city, town or village of that country. What makes some locations more popular among tourists and some locations are not preferred by the tourists. In other words, what are the aspects that make a place "tourist destination?"

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Tourist Destination – Elements and Life Cycle

COURSE PREPARATION TEAM

Prof Jitendra Srivastava, Director, SOTHSM **(Chairperson)**
Dr. Paramita Suklabaidya, Associate Professor, SOTHSM
Dr. Sonia Sharma, Assistant Professor, SOTHSM
Dr. Tangjakhombi Akoijam, Assistant Professor, SOTHSM
Dr. Arvind Kumar Dubey, Assistant Professor, SOTHSM **(Convener)**

PROGRAMME COORDINATOR

Dr. Arvind Kumar Dubey
Assistant Professor, SOTHSM

COURSE COORDINATOR

Dr. Sonia Sharma
Assistant Professor, SOTHSM

Unit Writers	Unit No.	Editor
Prof. Luvkush Mishra, ITHM., Dr. B.R. Ambedkar University, Agra	1	Prof. Harkirat Bains SOTHSM, IGNOU (Units 1,2,3,4,5,6,12 and 16)
Dr. Bharti Gupta, Central University of Jammu	2	
Dr. Dileep M.R, University of Calicut	3	
Dr. Suvidha Khanna, SHTM, Unversity of Jammu and Dr. Sonia Sharma SOTHSM, IGNOU	4	
Prof. Prashant Gautam, UIHTM, Punjab University	5,6	
Dr. Amit Katoch,Govt. PG College, Dharamshala	7	
Dr. Hiramani Kashyap, Govt. Degree College Kullu	8	
Dr. Arun Singh Thakur, UIHTM, Punjab University	9,15	Dr. Sonia Sharma SOTHSM, IGNOU (Units 7,8,9,10,11,13, 14, 15, 17)
Dr. Arvind Kumar, Vallabh Govt. College, Mandi	10	
Dr. Anil Gupta, SHTM, University of Jammu	11	
Dr. Sonia Sharma, SOTHSM, IGNOU and Dr. Vikash, Govt College for Women, Fatehabad	12	
Dr. Vikash, Govt College for Women, Fatehabad	13	
Dr. Jitendra Mohan Mishra, IGNTU	14	
Dr. Bharat B. Sharma, Kaplan Business School, Melbourne and Dr. Sonia Sharma, SOTHSM, IGNOU	16	
Prof. Sunil Kabia, ITHM, Bundelkhand University, Jhansi	17	

FACULTY MEMBERS

Prof. Jitendra Kumar Srivastava, Director, SOTHSM
Prof. Harkirat Bains, SOTHSM
Dr. Paramita Suklabaidya, Associate Prof., SOTHSM
Dr. Sonia Sharma, Asstt. Prof., SOTHSM
Dr. Arvind Kumar Dubey, Asstt. Prof., SOTHSM
Dr. Tangjakhombi Akoijam, Asstt. Prof., SOTHSM

TYPING ASSISTANT

Mr. Dharmendra Kumar Verma, SOTHSM
Mrs. Kaushalya Saini, SOTHSM

PRODUCTION TEAM

Mr. Tilak Raj
Asst. Registrar (Publication)
MPDD, IGNOU, New Delhi

Mr. Yashpal
Section Officer (Publication)
MPDD, IGNOU, New Delhi

January, 2021

© *Indira Gandhi National Open University, 2021*

ISBN : 978-93-90773-71-8

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the Indira Gandhi National Open University.
Further information on the Indira Gandhi National Open University courses may be obtained from the University's office at Maidan Garhi, New Delhi.

Printed and published on behalf of the Indira Gandhi National Open University, New Delhi by the Registrar, MPDD, IGNOU, New Delhi.
Laser Typeset by Tessa Media & Computers
Printed at : Raj Printers, A-9, Sector B-2, Tronica City, Loni (Gzb.)

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

Indira Gandhi National Open University
School of Tourism and Hospitality Services Management

BTMC-135

Concept and Impacts of Tourism

School of Tourism and Hospitality Services Management
Indira Gandhi National Open University

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Breaking of the Glass Ceiling: Women Making Inroads to Corporate Boardrooms

By: Som Prakar Negi
Dated: 2021

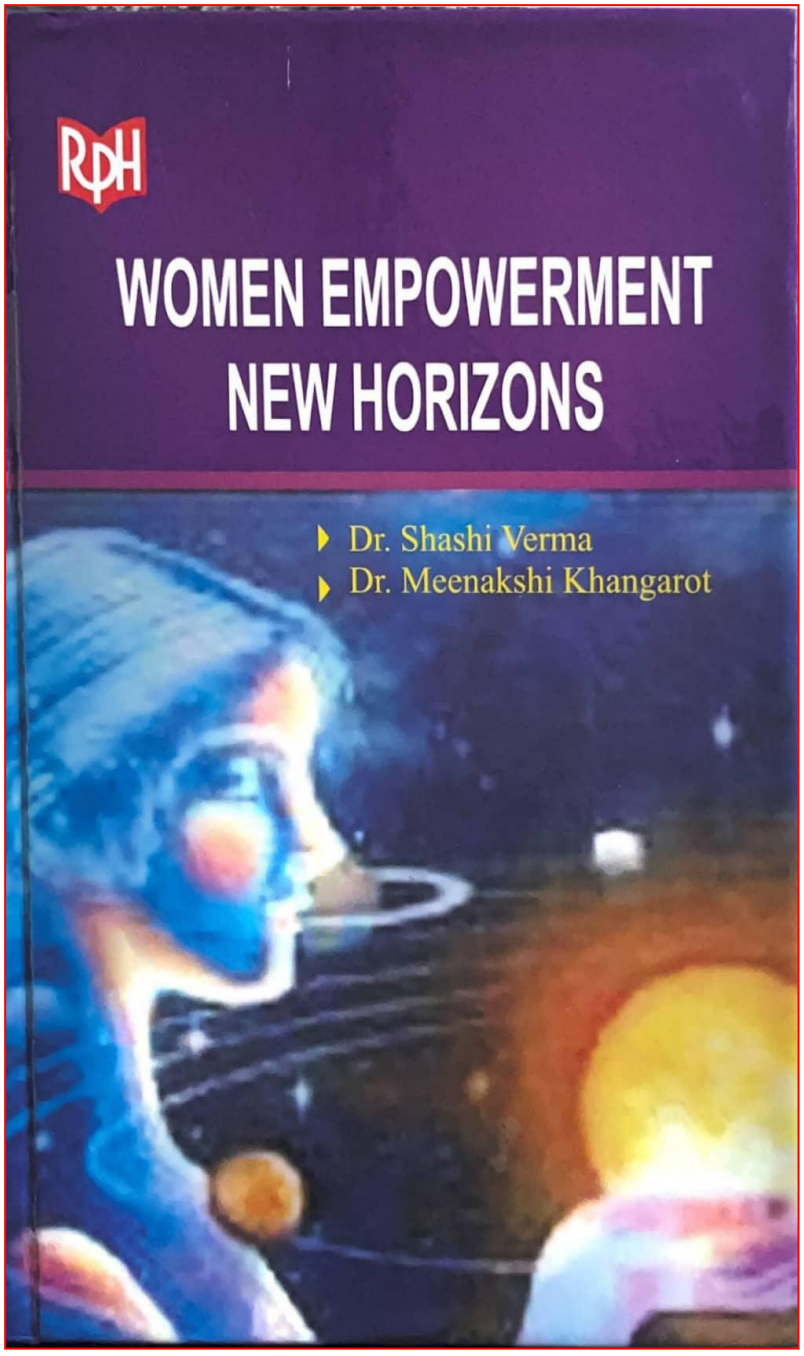

18

Breaking of the Glass Ceiling: Women Making Inroads to Corporate Boardrooms

Som Prakar*

Women represent almost one half of the entire human race. There are slightly more men than woman. But women do not share the resources equally. From ancient times, they have been subjugated economically, politically, socially and culturally by the patriarchal forces. In the field of business and commerce this type of bias is more rampant everywhere. But with the passage of time, the girls are coming out of their traditional roles. They are making inroads in the areas where men had been reigning unchallenged. They need to break the *'glass ceiling'* which is an intangible barrier within hierarchy that prevents women from obtaining top level positions. In this paper an attempt is made to explore how women are trying hard to break the glass ceiling to reach to the boardrooms and what are the implications of their presence in the boardrooms as decision makers.

Introduction

Women constitute 49.5 percent of the world population. Its nearly one half of the human race. From the times immemorial she has been subjected to patriarchal biases through traditional economics especially from the beginning of Iron Age. Historically, women are treated as weaker of the two genders. While carrying out agricultural pursuits, man had the advantage. But with the advent of knowledge, women have been able to be at par with men. They were assigned traditional work such as child rearing, cooking, caring elders and nursing. Commerce and trade are regarded as masculine sphere of activities. Men are supposed to be the real heir of the world of finance and commerce. But with the passage of time women succeeded in making inroads in the sphere traditionally dominated by men. But still there is a long way to go.

* Assistant Professor, Govt. College Panarsa, Distt. Mandi. H.P

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Breaking of the Glass Ceiling: Women Making Inroads to Corporate Boardrooms

12.	Political Empowerment and Status of Indian women **Dr. Vijay Laxmi Mishra**	151
13.	A Primer in Policy and Legal Discourse on Empowerment of Women in India **Dr. Kumud Jain**	162
14.	Organochlorine Pesticides in Human Milk : Safety concern for Neonates **Dr. Mamta Sharma**	171
15.	Awareness About Violence : A Key to Empower Women **Dr. Anjali Sharma**	183
16.	The Cornerstone of Women Empowerment : Gender Equality **Dr. Jyoti Gautam**	196
17.	Framed Women Entrepreneurs in India **Dr. Radha Solanki**	210
18.	Breaking of the Glass Ceiling: Women Making Inroads to Corporate Boardrooms **Som Prakar**	224
19.	Narratives of Resistance: A Selective Study of the Twentieth Century's Muslim Female Writer Ismat Chugtai **Dr. Seema Sharma**	231
20.	Role of NGO'S in Rural Women Empowerment **Dr. Suchitra Sharma, Dr. Amarnath Sharma**	237
21.	Inquiry And Dialogues on Empowerment of Women : A Legal Context **Minakashi Kumawat**	248
22.	Women Empowerment and Indian Law **Dr. Malika Parvin**	258
23.	Women Empowerment: Condition of women in India **Dr. Punam Bajaj**	267
24.	Emancipation of Women: A Burning Issue **Richa Mehta, Sampat Lal Bhadu**	273
25.	Women Empowerment in India : A Brief Discussion **Dr. Jai Kiran, Dr. Sanjeev Kumar Bragta**	283

Publisher:
Mrs. Kiran Parnami
Raj Publishing House
44, Parnami Mandir, Govind Marg, Jaipur-302004
Cell : 09414051782
Email : shreerajpublishing@gmail.com

Women Empowerment New Horizon

Editor
Dr. Shashi Verma
Dr. Meenakshi Khangarot

© Subject to the content of the chapter

International Standard Book No. (ISBN)
978-93-91777-30-2
Edition : 2021

Jurisdiction of book distribution : All India

All rights reserved by the editor. No part of this publication can be reproduced or transmitted in any from or by means, without written permission of the editor.

The responsibility of the facts stated, conclusions and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the contributors (authors and co-authors). And editor and publisher bear no responsibility for them, whatsoever.

Printed at
Trident Enterprises, Delhi

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Women in Films: A Case Study of The Film Earth and Water under the Lens of Feminist Film Theory

By: Dr. Rakesh Rana Deptt. of English

Dated: 2021

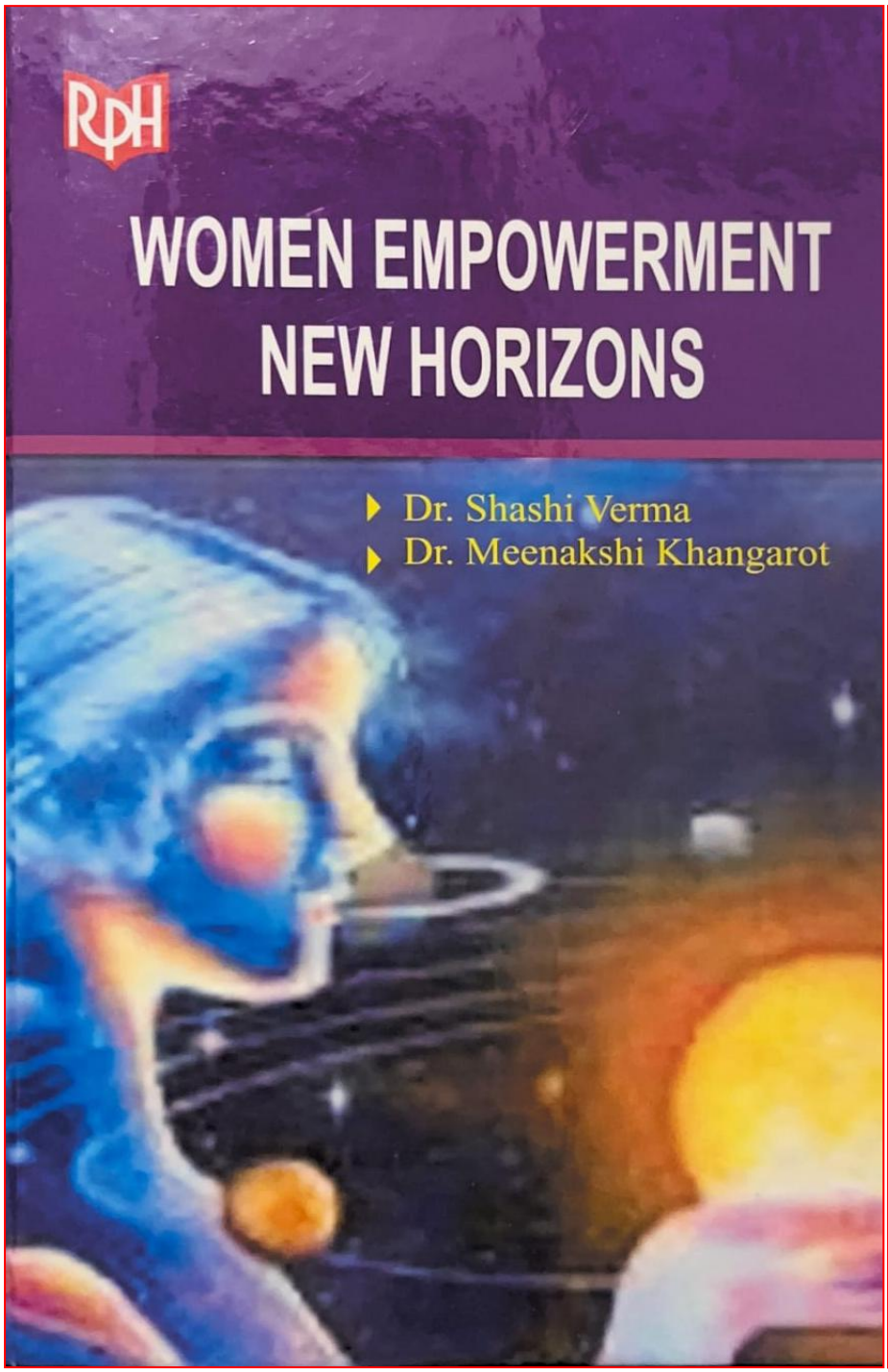

Publisher:
Mrs. Kiran Parnami
Raj Publishing House
44, Parnami Mandir, Govind Marg, Jaipur-302004
Cell : 09414051782
Email : shreerajpublishing@gmail.com

Women Empowerment New Horizon

Editor
Dr. Shashi Verma
Dr. Meenakshi Khangarot

© Subject to the content of the chapter

International Standard Book No. (ISBN)
978-93-91777-30-2
Edition : 2021

Jurisdiction of book distribution : All India

All rights reserved by the editor.
No part of this publication can be reproduced or transmitted in any from or by means, without written permission of the editor.

The responsibility of the facts stated, conclusions and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the contributors (authors and co-authors). And editor and publisher bear no responsibility for them, whatsoever.

Printed at
Trident Enterprises, Delhi

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Women in Films: A Case Study of The Film Earth and Water under the Lens of Feminist Film

9

Women in Films: A Case Study of the film Earth and Water under the Lens of Feminist Film Theory

Dr. Rakesh Rana*

The Feminist Film Theory is at present an established study. This paper focuses to study the two film texts *Earth* and *Water* under the lens of feminist film theory. In order to understand feminist film theory, first we need is to understand film theory. The Film theory is an academic discipline closely allied with critical theory which aims to find out the essence of the cinema and provide conceptual frameworks for understanding film's relationship to reality, the other arts, spectators and the society at large. It is explained as the study of filmmaking from the technical aspects of making a movie to its relationship to other art forms and its effects on society and culture. This is not an independent field of study. It is an integrated study associated with psychology, philosophy, art theory, linguistics, cultural theory, literary theory, social science, economics and political science.

Introduction

Film theory has its birth during the period of silent cinema (1895-1929). It is a collection of interpretative frameworks developed over a period of time in order to understand the way films are made and received. The film theory evolved slowly but surely being influenced by the works of eminent directors, film critics and film theorists such as Hugo Munsterberg, Rudolf Arnheim, Louis Delluc, Jean Epstein, Sergei Eisenstein, DzigaVertov, Lev Kuleshov Bela Balazs and Siegfried Kracauer etc. Writing about film theorists before 1945, Malcom Turvey, a film scholar says that the film theorists before 1945 used to compare and contrast cinema to other art forms, especially to the theatre to which cinema was seen as

Contents

S.No.	Chapter Name	Page No.
	Preface	
1.	Women Human Rights and Empowerment **Dr. Shashi Verma**	1
2.	Women Empowerment in India: Challenges & Prospects **Dr. Meenakshi Khangarot**	16
3.	Feminism in the United Kingdom 18th Century and Today **Brijmohan Lamba**	41
4.	Impact of Digital Literacy Training to Women Empower **Dr. Om Singh**	55
5.	Role of Education for Empowerment of Women **Dr. Ajanta Gahlot**	66
6.	Role of National Human Right Commission for Advancement of Human Rights of the Women **Dr. Vinod Kumar Sharma**	79
7.	Empowering Women through Sports **Dr. Pratibha Singh Ratnu**	94
8.	Empowered Women in the Creative world of Rushdie's Novels **Dr. Merily Roy**	116
9.	Women in Films: A Case Study of the film Earth and Water under the Lens of Feminist Film Theory **Dr. Rakesh Rana**	124
10.	Education- An Effective Tool for Women Empowerment in India **Dr. Renu Durgapal**	132
11.	Media and Women Empowerment Relationship : A Critical Review **Dr. Renu Durgapal**	142

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi
Dated;2021

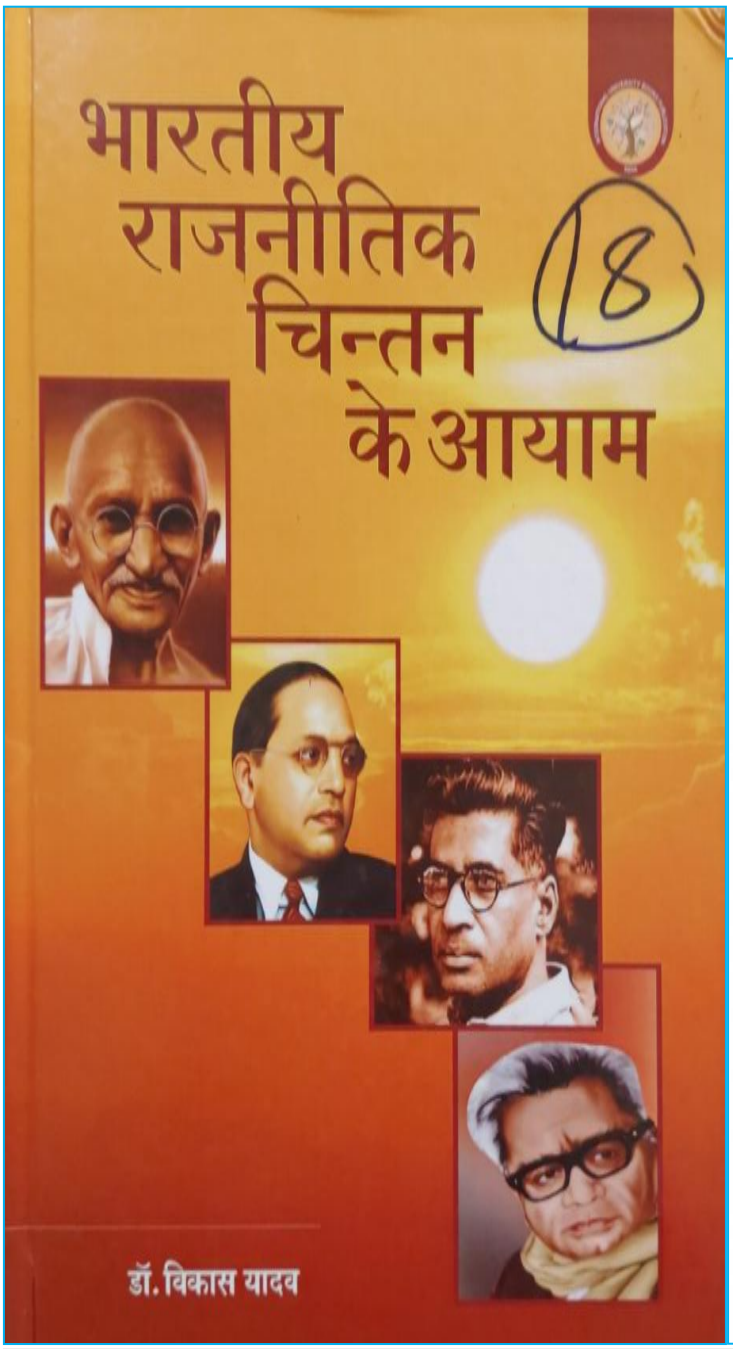

Publisher
International UniBooks Jaipur

16

भारतीय समाज में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता

ISBN No 978-81-949980-7-5

Self Attested

डॉ॰ अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय बन्जार

भारत की पावन भूमि पोरबंदर में 2 अक्तूबर 1869 ई॰ को जन्मे महात्मा गांधी की असंख्य स्मृतियां भारतीय जनमानस में आज भी जीवित है। आधुनिक भारत के इतिहास में गांधी का जन्म सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए ऐसी घटना है जिसके बिना भारत की अस्मिता सम्भव नहीं है। गांधी दर्शन आज समस्त भारतीयों के लिए वह अदृश्य नींव है जिसमें प्रत्येक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियों एवं अहिंसा का महल खड़ा है। किसी भी समाज और देश के शासक की अपेक्षा जनमानस के संस्कारों से सम्बद्ध रहती है। लेकिन आज हम जिस व्यवस्था में जीवन जी रहें वह सत्त पक्ष द्वारा प्रायोजन एवं प्रभावित है, जिसमें अधिकतर जनता उस सांचे में स्वयं को समायोजित नही कर पा रही हैं, जिसके दुष्परिणाम भाई–भतीजा, भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इसलिए भारतीय समाज को ऐसे युग, पुरूषों की आवश्यकता है जो गांव से ले कर शहर तक जन–जीवन में व्याप्त विषमताओं का चित्रण करते हुए असहाय जनता के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने का प्रयास करे। जो मजदूरों और किसानों में व्यापत अर्थिक समस्या का समाधान कर अत्याचारियों के विरूद्ध निर्भीक होकर लडने का साहस प्रदान करे। जर्मो में व्याप्त आडम्बरो के विरूद्ध जन–मानस को उद्‌बुद कर के ऐसे मानवतावादी धर्म की ईजाद करे जिसमें अहिंसा, सत्य, त्याग, सहिष्णुता, ईमानदारी, आत्मिक शुचिता, निष्कपटता आहि को प्रतिष्ठित करें। गांधी देश के वह विभूति थे जिन्होंने देश की प्रजा को अहिंसा के द्वारा विद्रोह करने के लिए आन्दोलित कर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी थी। उनके अनुसार सत्य और अहिंसा से बढ़ कर कोई धर्म नहीं था। "सत्य ही ईश्वर है, गांधी ने इस को पहचाना और वे इस नतीजे पर पंहुचे कि ईश्वर अल्लाह बहुत से होंगे तो मेरा सत्य और तेरा

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

भारतीय समाज में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता

16 भारतीय समाज में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता
डॉ॰ अशोक कुमार 111-114
17 महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता वैश्विक परिदृश्य में
चन्द्रकला शर्मा 115-120
18 राम मनोहर लोहियाः समाजवाद के मौलिक चिंतक
डॉ. सर्वेश कुमार 121-126
19 समाज सुधारक एवं सामाजिक क्रांतिकारी नेता– डॉ अम्बेडकर
डॉ. अर्चना शर्मा 127-133
20 महात्मा गांधी का विकास का प्रतिमानः– 21वीं सदी की महती आवश्यकता
शारदा देवी 134-140
21 स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक चिन्तन
डा. नमिता चौहान 141-145
22 डॉ एम. एन. रॉय– एक समीक्षा नवमानववाद के पुरोधा
डॉ.संगीता महाशब्दे 146-151
23 "भीमराव अम्बेडकर : एक महान सामाजिक राजनीतिक सुधारक"
डॉ. प्रमिला वाघवा 152-156
24 महात्मा गाँधी का अहिंसा दर्शन – एक संक्षिप्त अध्ययन
डॉ. शालिनी गुप्ता 157-162
25 पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानववाद के द्रष्टा के रूप में
डॉ सरिता नेगा 163-166

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

शिक्षा प्रणाली की पुन: संरचना

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi
Dated;2022

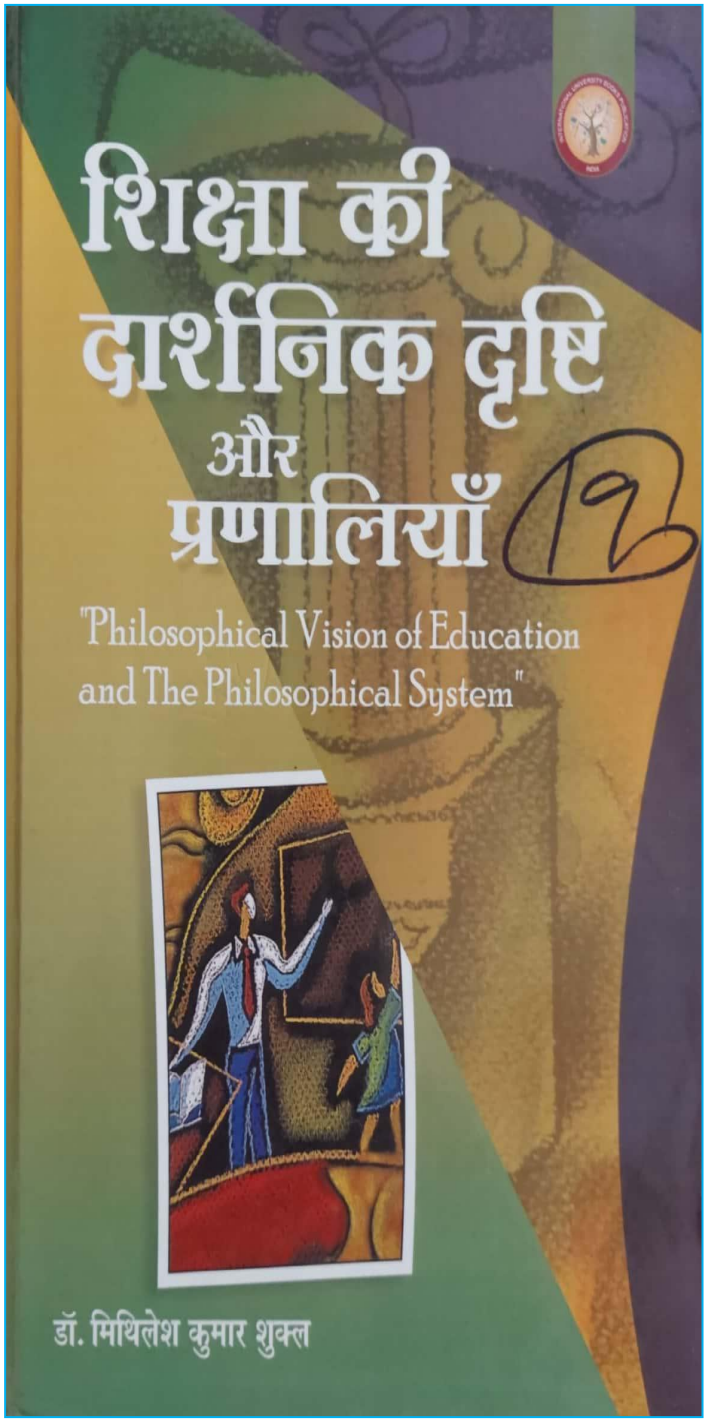

Self Attested

15

शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना

International University Books Jaipur
ISBN No - 978-93-92267-02-4

डॉ0 अशोक कुमार

सहायक प्राध्यापक हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बंजार
जिला कुल्लू हि0प्र0

शिक्षा मनुष्य का वह गुण है जो सही मायने में मानव बनाने का सामर्थ्य रखती है। किसी भी देश का शिक्षित व्यक्ति देश की बुद्धिजीवी पूंजी, अलग-अलग क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देने वाले, संस्कारों और मानव मूल्य की बुनियाद तय करने वाले होते हैं। शिक्षा वह आलोक है जो मानव जीवन में व्याप्त अज्ञानता मिटा कर मनुष्य में उचित अनुचित का विवेक उत्पन्न कर जीवन पथ पर चलने के योग्य तथा अधिकारों से अवगत करा कर उसे सशक्त बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। अपने जीवन के लक्ष्य को समझने, लक्ष्य की पूर्ति करने तथा व्यावहारिक ज्ञान के संवर्द्धन के लिए शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ है सीखने-सिखाने की क्रिया। "शिक्षा को अंग्रेजी में एजुकेशन (Education) कहा जाता है, जिसकी व्युतति लैटिन भाषा के शब्द 'एडकेयर' (Edcare) से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – अंदर से बाहर निकालना। शिक्षा के दो अर्थ है – संकुचित एवं व्यापक। संकुचित अर्थ में शिक्षा से अभिप्राय है – बालक की अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करके उसे मजबूत बनाना ताकि वह भावी जीवन की

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

शिक्षा प्रणाली की पुन: संरचना

शिक्षा की दार्शनिक दृष्टि और प्रणालियाँ

Philosophical Vision of Education and The Philosophical System

सम्पादक

डॉ. मिथिलेश कुमार शुक्ल

एम० ए०, एम० एड०, नेट०, पी-एच० डी०

प्राचार्य

भुवन मालती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,मोतिहारी

Kaptan Netram Singh Charitable Trust

International University Books Publication-Jaipur

12	रविंद्रनाथ टैगोर के शिक्षा के उदेश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि मनोज कुमार तिवारी	65-70
13	भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्वामी विवेकानन्द जी का योगदान डॉ. राजेश मौर्य,प्रो. डॉ. विजय सिंह राठौर	71-77
14	फ्रोबेल का किंडर गार्टन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ अम्बुज कुमार	78-81
15	शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना डॉ0 अशोक कुमार	82-87
16	स्वामी विवेकानंद : जीवन प्रबंधन का सूत्र शिक्षक शिक्षा संगीता रणदिवे	88-91
17	पाश्चात्य शिक्षा दर्शन : एक विहंगावलोकन डा० मिथिलेश कुमार शुक्ल	92-97
18	शिक्षा एवं राष्ट्रीय एकता डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय	98-104
19	फ्रॉबेल की दार्शनिक प्रणाली डॉ.रापना मिश्रा	105-111
20	जॉन डी वी की शिक्षा जगत में भूमिका 1. बाबू लाल मीणा 2. जितेन्द्र प्रसाद	112-114
21	जे0 कृष्णमूर्ति की शिक्षा दार्शनिक प्रणाली खुशबू कुमारी	115-120
22	गाँधी की दार्शनिक प्रणाली के उदेश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण विधि कुमकुम देवी	121-126
23	भारतीय शिक्षा दार्शनिक दृष्टि : एक अवलोकन पंकज बर्नवाल	127-133
24	शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन डॉ. ज्योत्साना गौड़	134-138

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में सामाजिक चेतना

By: Dr. Ashok Kumar Deptt. of Hindi
Dated;2022

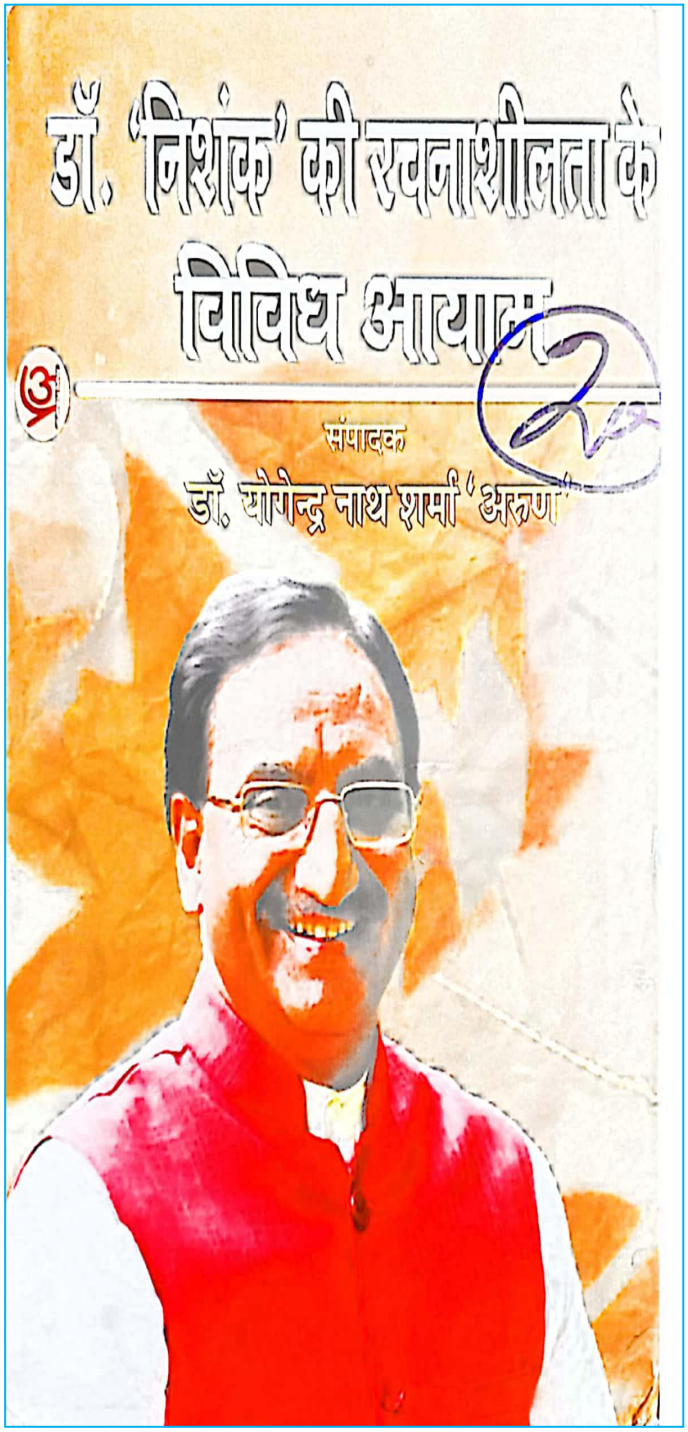

Self Attested

978-93-80845-51-7

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में सामाजिक चेतना

डॉ. अशोक कुमार

साहित्य समाज का दर्पण होता है। प्रत्येक युग का समर्थ साहित्यकार का नैतिक दायित्व होता है कि वह अपने समय, समाज, संस्कृति के साथ-साथ तत्कालीन परिस्थितियों की प्रवृत्तियों की श्रेष्ठताओं और कमियों से पाठकों को अवगत कराए। पश्यति पशु, मननात मनु अर्थात् जो सिर्फ देखता है कि वह तो मात्र पशु है लेकिन जो मनन करता है वह मनुष्य है। एक संवेदनशील साहित्यकार जो देखता है और अपनी प्रवृत्ति, शिक्षा संस्कार के अनुरूप चिन्तन कर प्रतिक्रिया देता है। कालजयी साहित्य वर्तमान में संघर्ष कर भविष्य को निर्मित करने का प्रयास करता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्कार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने 'अंतहीन' कहानी संग्रह में समसामयिक समस्याओं को आधुनिकता के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित कर पाठकों के समक्ष समाज में फैली विषमताओं, समस्याओं, कुरीतियों, नारी शोषण, व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, मानवीय कुंठा आदि विभिन्न समस्याओं को चित्रित कर समाज में चेतना जागृत करते है। इतिहास साक्षी है कि चेतना द्वारा मनुष्य उचित-अनुचित, सही-गलत, अच्छाई-बुराई का मूल्यांकन कर समाज का कल्याण कर सकता है। "किसी समुदाय की समाज-व्याधिकीय तथा जरूरतमन्दी दशाओं में सुधार लाने की दिशा में निजी अथवा सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा किये गए व्यवस्थित प्रयासों को समाज कल्याण कहते हैं। समाज-कल्याण का उद्देश्य जहां एक ओर

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में सामाजिक चेतना

डॉ. 'निशंक' की रचनाशीलता के विविध आयाम

संपादक
डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

अनंग प्रकाशन
दिल्ली (भारत)

अनुक्रम

डॉ. 'निशंक' की रचनाशीलता का अनूठा मूल्यांकन 5

कहानी खण्ड

कहानीकार 'निशंक'
– *डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय* 15

राजनेता में बसता है साहित्य सर्जक
– *डॉ. श्रद्धा सिंह* 24

'एक और कहानी' कहानी संग्रह की समकालीन संवेदना की अभिव्यक्ति
– *डॉ. नरेश मिश्र* 32

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियाँ : संवेदना की उदात्त भिव्यक्ति
– *डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी* 42

कहानी 'वाह जिंदगी'
– *संदीप कुमार* 52

अंतहीन हो यह सिलसिला
– *अशोक पांडेय* 55

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में सामाजिक चेतना
– *डॉ. अशोक कुमार* 59

जीवन के आपाधापी एवं आत्मनिर्भर बनने की यथार्थ कहानियां
– *डॉ. अरविन्द* 66

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में चित्रित समाज
– *डॉ. पठान रहीम खान* 77

रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में सामाजिक सरोकार
– *डॉ. दिलीप मेहरा* 88

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Envisioning an Ecofeminist Sita through Chitra Banerjee Divakaruni's The Forest of Enchantments

By: Charu Ahluwalia Deptt. of English

Dated: April 2022

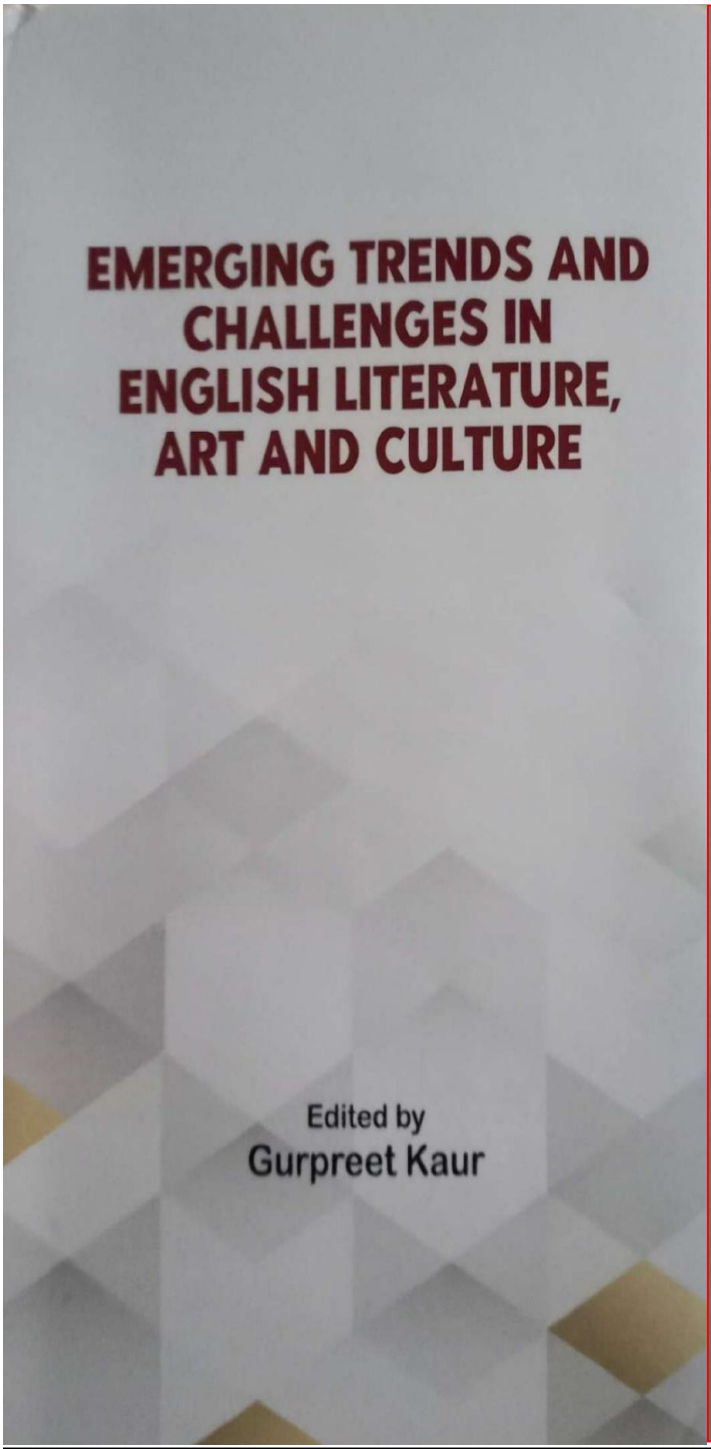

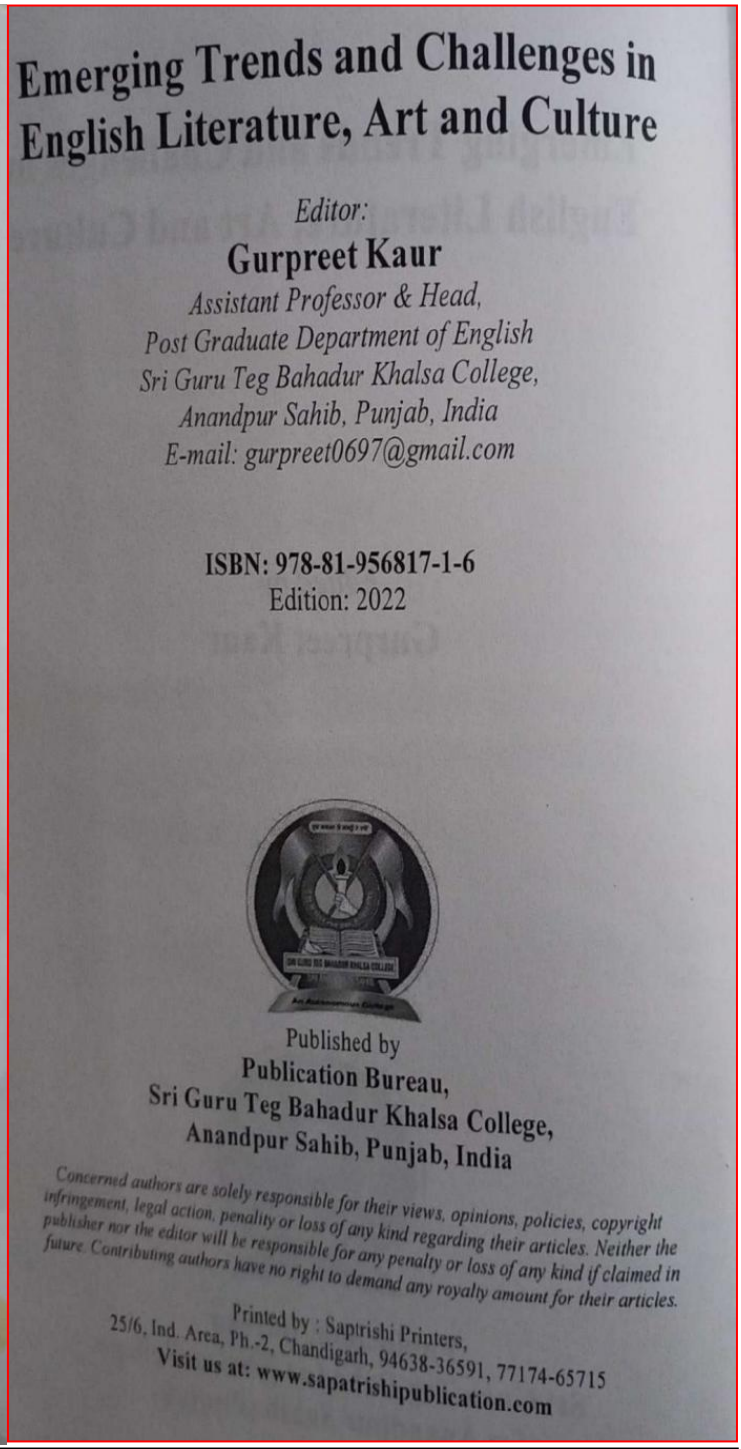

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Envisioning an Ecofeminist Sita through Chitra Banerjee Divakaruni's The Forest of Enchantments

40

Envisioning an Ecofeminist Sita through Chitra Banerjee Divakaruni's *The Forest of Enchantments*

Charu Ahluwalia & Dr. Purnima Bali

Introduction

According to Webster's New World Encyclopaedia Britannica company, 'Ecofeminism is a movement or theory that employs feminist principles and ideas to ecological issues'. Ecofeminism is a social awakening of women to sustain a war against a patriarchal society that is causing harm to the environment. Ecofeminists analyse the connection between women and nature in culture, religion, and literature. Ecofeminists call for the theory of green politics where there is no domination of one group over the other. In Indian philosophy, the Vedas have always paid equal importance to all organisms. Nature and literature have always been in proximity where woman-nature camaraderie is depicted through common traits of creation, nurture, fertility, and motherhood. Hence, in Hindu mythologies, women characters have been homogenized as one with nature. Tribal versions of Ramayan help to fetch a close connection between humans and nature. For example, in Assam, where weaving is an integral part of female household activity, we have Sita as a fine weaver. In Adayan Ramayan, Sita resides in forests before falling in love with Ram. However, in modern times, India with its mechanization or with the advent of capitalism removed women from their active role as agriculturists. Women did not have land or property rights. So, this new facet of capitalism in a way removed the women to the periphery of society and thus marginalized them. According to Vandana Shiva in *Staying Alive: Women, Ecology, and Survival in India* "... the death of prakriti is simultaneously a beginning of their marginalization, devaluation, displacement, and ultimate dispensability" (40).

Hence, if we study the ancient texts in the modern light of ecofeminism, we realize that both women and nature have been at the

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Unveiling the Mystery Behind the Veil: A Faminist Study of the Holy Woman

By: Richa Ahluwalia Deptt. of English

Dated: April 2022

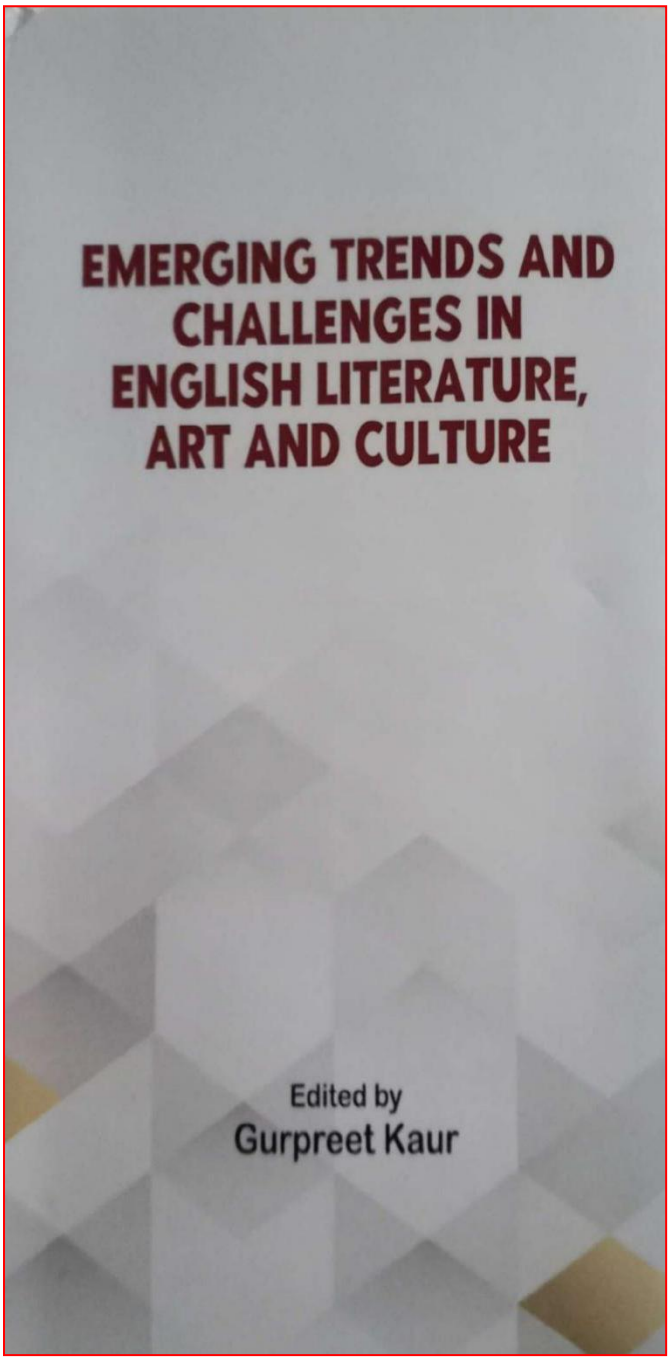

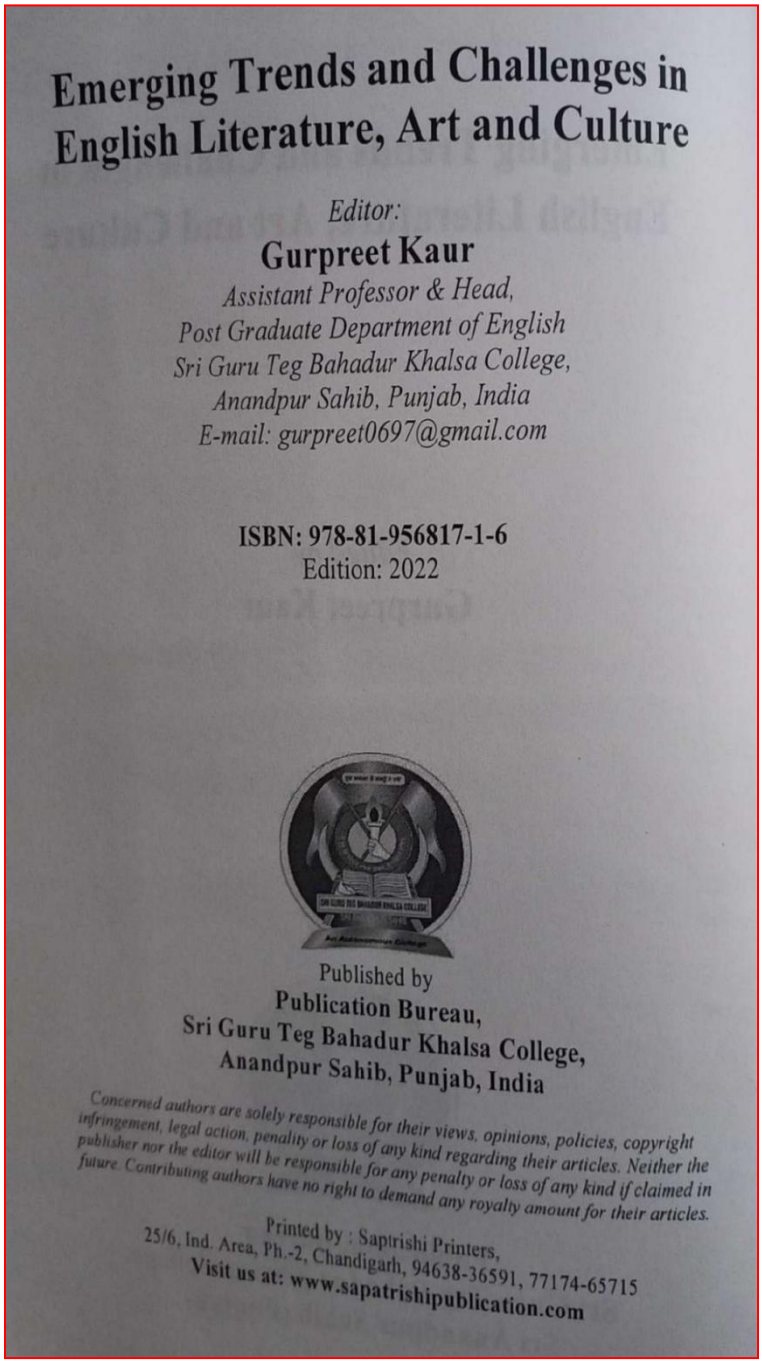

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

46

Unveiling the Mystery Behind the Veil: A Feminist Study of *The Holy Woman*

Richa Ahluwalia
&
Dr. Rekha Sharma

Introduction:

Since time immemorial, veils of different styles and forms were prevalent in different cultures. "The act of veiling has existed even before the existence of Islam. It has particularly spread in Arab cultures even in Greek and Rome" (Juwariyah 81). And yet veiling in other religions is not seen as a sign of oppression. Initially the tradition of veiling was not associated with religion but by environment. Women chose veil to escape the extreme heat of the desert. Veil was also related to class and position. Upper class women wore veil as they could afford it while the lower class women who had to work in the fields did not wear it. When Islam came, it gave the basis in dress code for women. Islam required women to dress modestly.

Veil was considered a means of guarding women from the male gaze. Thus veil became a metaphor for modesty and honor. Veil is a head covering of a muslim woman. "The veil can take any form of veiling (i.e. burqa, niqab, chador and headscarf as long as the hair is completely covered" (Shah 109). The most common form of veiling is Hijab, which is a kind of headscarf worn by Muslim women, covering the head and showing only the face. It has another piece of clothing covering the body. Chador refers to a full cloak covering the head and the body. It is said to have been used by Iranian women. Niqab and Burqa are different from Hijab and Chador as not only do they cover the body and the head, but also the face. The difference between Niqab and Burqa is that Niqab has a small space to show the eyes, while Burqa does not leave a single open space in the face as the eyes are covered by a grill. While Niqab is popular in Saudi, Burqa is believed to be imposed by Taliban regime in Afghanistan.

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Gender Bias and The Puissance Politics: A Comparative Study of Woman Confinement during Pandemic and Monika Ali'sBrick lane

By: Richa Ahluwalia Deptt.of English
Dated: December 2022

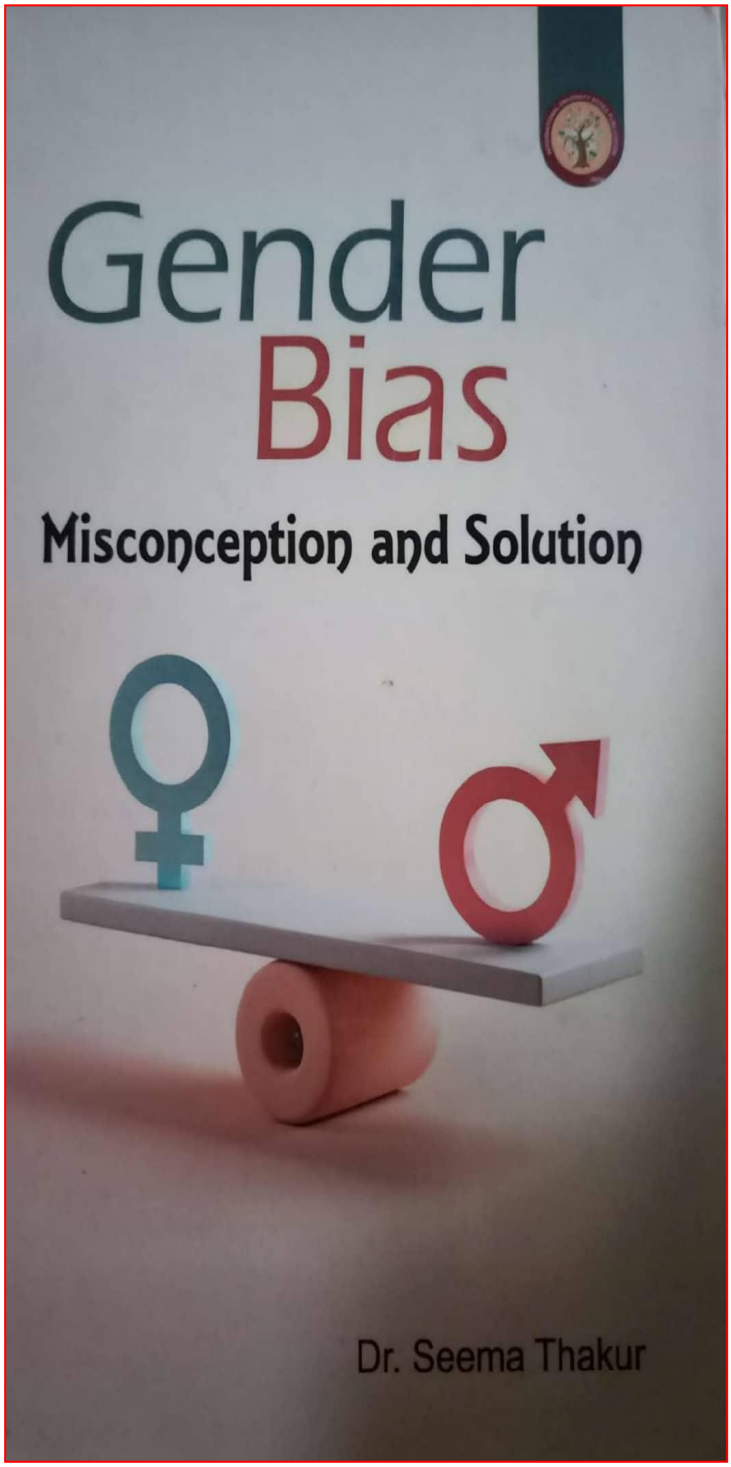

Publisher:
Kaptan Netram Singh Charitable Trust,
International University Books Publication
A-215, Moti Nagar, Kaptan Netram Singh Chauhan Marg,
Street No-7, Queens Road, Jaipur- 302021

Cont- 9413970222
e-mail - iubphouse@gmail.com ,
Web- www.ugcjournal.com

ISBN: 978-93-92267-21-5

Edition: 2022

© Publisher

Price: Rs-1050/-

इस पुस्तक में सम्मिलित सम्पूर्ण सामग्री के प्रमाणीकरण की एक मात्र जिम्मेदारी लेखक की होगी। यदि इस पुस्तक में सम्मिलित सामग्री साहित्यिक चोरी में पकड़ी जाती है तो मात्र लेखक ही दोषी और दंड का भागी होगा। मुद्रक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

The entire and literal responsibility of each paper published in this book rests with the author himself. The publisher and the printer do not necessarily agree with the views of the author. In any case, the jurisdiction of the Court shall be the city of Jaipur only.

All rights reserved. No Part of this publication may be reproduced or copied for any purpose by any means, manual, mechanical or electronic, without prior and written permission of the copyright owner and the Publishers.

All the responsibility of authenticating the articles included in this book will be solely with the author. If an article is caught in plagiarism, then only the author will be guilty and liable to punishment.

Printed at : Thomson Press, Delhi

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Gender Bias and The Puissance Politics: A Comparative Study of Woman Confinement during Pandemic and Monika Ali'sBrick lane

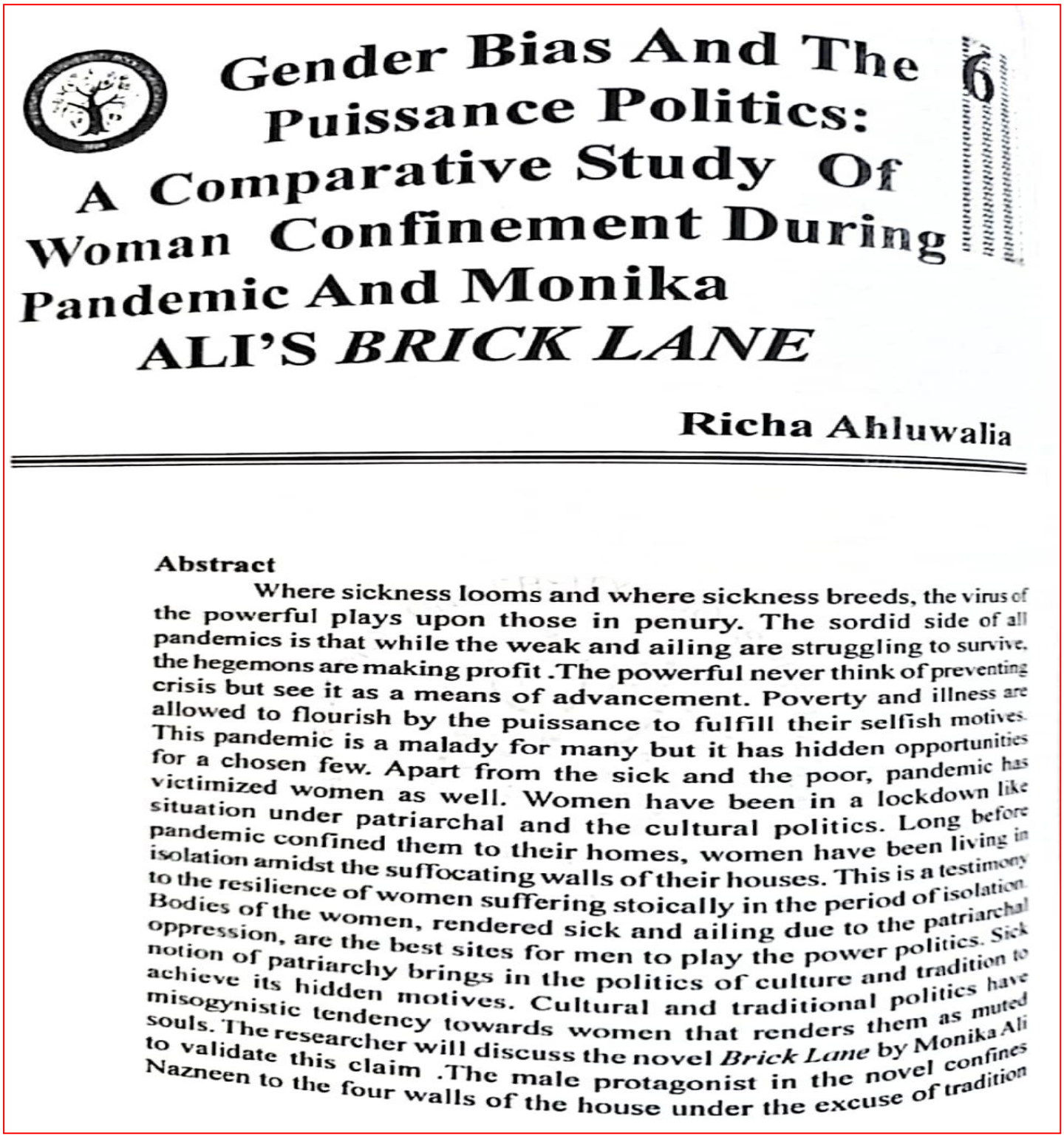

Gender Bias And The Puissance Politics: A Comparative Study Of Woman Confinement During Pandemic And Monika ALI'S *BRICK LANE*

6

Richa Ahluwalia

Abstract

Where sickness looms and where sickness breeds, the virus of the powerful plays upon those in penury. The sordid side of all pandemics is that while the weak and ailing are struggling to survive, the hegemons are making profit .The powerful never think of preventing crisis but see it as a means of advancement. Poverty and illness are allowed to flourish by the puissance to fulfill their selfish motives. This pandemic is a malady for many but it has hidden opportunities for a chosen few. Apart from the sick and the poor, pandemic has victimized women as well. Women have been in a lockdown like situation under patriarchal and the cultural politics. Long before pandemic confined them to their homes, women have been living in isolation amidst the suffocating walls of their houses. This is a testimony to the resilience of women suffering stoically in the period of isolation. Bodies of the women, rendered sick and ailing due to the patriarchal oppression, are the best sites for men to play the power politics. Sick notion of patriarchy brings in the politics of culture and tradition to achieve its hidden motives. Cultural and traditional politics have misogynistic tendency towards women that renders them as muted souls. The researcher will discuss the novel *Brick Lane* by Monika Ali to validate this claim .The male protagonist in the novel confines Nazneen to the four walls of the house under the excuse of tradition

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Gender Bias in Literature Sita's Subaltern Sisters: Denouncing Bigotry in Ramayan through Chitra Banerjee Divakaruni's the Forest of Enchantments

By: Charu Ahluwalia Deptt. of English

Dated: April 2022

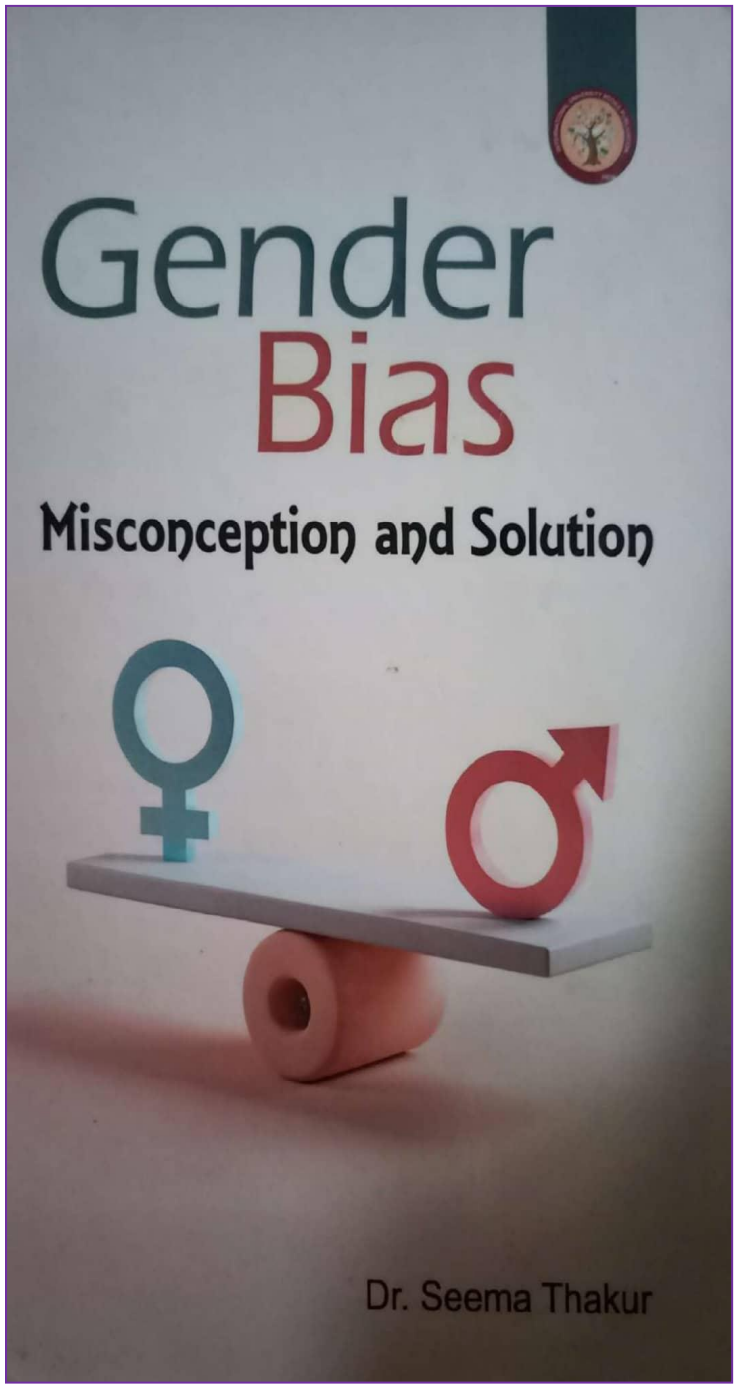

Publisher:
Kaptan Netram Singh Charitable Trust,
International University Books Publication
A-215, Moti Nagar, Kaptan Netram Singh Chauhan Marg,
Street No-7, Queens Road, Jaipur- 302021

Cont- 9413970222
e-mail - iubphouse@gmail.com ,
Web- www.ugcjournal.com

ISBN: 978-93-92267-21-5

Edition: 2022

© Publisher

Price: Rs-1050/-

इस पुस्तक में सम्मिलित सम्पूर्ण सामग्री के प्रमाणीकरण की एक मात्र जिम्मेदारी लेखक की होगी। यदि इस पुस्तक में सम्मिलित सामग्री साहित्यिक चोरी में पकड़ी जाती है तो मात्र लेखक ही दोषी और दंड का भागी होगा। मुद्रक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

The entire and literal responsibility of each paper published in this book rests with the author himself. The publisher and the printer do not necessarily agree with the views of the author. In any case, the jurisdiction of the Court shall be the city of Jaipur only.

All rights reserved. No Part of this publication may be reproduced or copied for any purpose by any means, manual, mechanical or electronic, without prior and written permission of the copyright owner and the Publishers.

All the responsibility of authenticating the articles included in this book will be solely with the author. If an article is caught in plagiarism, then only the author will be guilty and liable to punishment.

Printed at : Thomson Press, Delhi

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Gender Bias in Literature Sita's Subaltern Sisters: Denouncing Bigotry in Ramayan through Chitra Banerjee Divakaruni's the Forest of Enchantments

Gender Bias in Literature Sita's Subaltern Sisters: Denouncing bigotry in Ramayan through Chitra Banerjee Divakaruni's the forest of Enchantments

Charu Ahluwalia

Abstract

In the context of Indian mythology, the marginalized characters always remain muted. Even when they try to narrate the self-story through literature, they remain unheard and in turn become a subaltern. In ancient Ramayan, we come across women subaltern characters that try to voice themself but remain in a limbo of oblivion. The womanbecomes a subaltern who is silenced because she does not have access to power, authority, and speech; even if she speaks, she remains unheard. Through present-day mythic fiction under study i.e. *The Forest of Enchantments* by Chitra Banerjee Divakaruni, the woman subaltern characters have found an identity. Writing history demands self-representation and only through writing can the subaltern find a representation in history. In this context, the researcher will try to unearth the voices of the subaltern womenthrough Sita's empathy towards them so that when these voices are heard they can change history. This common bond of sisterhood strengthens the struggle against gender bias. The paper will try to prove that gender bias against women existed in ancient myths and the same is demystified in modern mythic fictionto present a liberated version of formerly cocooned voices.

Keywords: Ramayan, Indian mythic fiction, subaltern, Sita, Feminism.

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Adaptation vs Novelization The Feminist Narrative

By: Dr. Rakesh Rana Deptt. of English
Dated: 2022

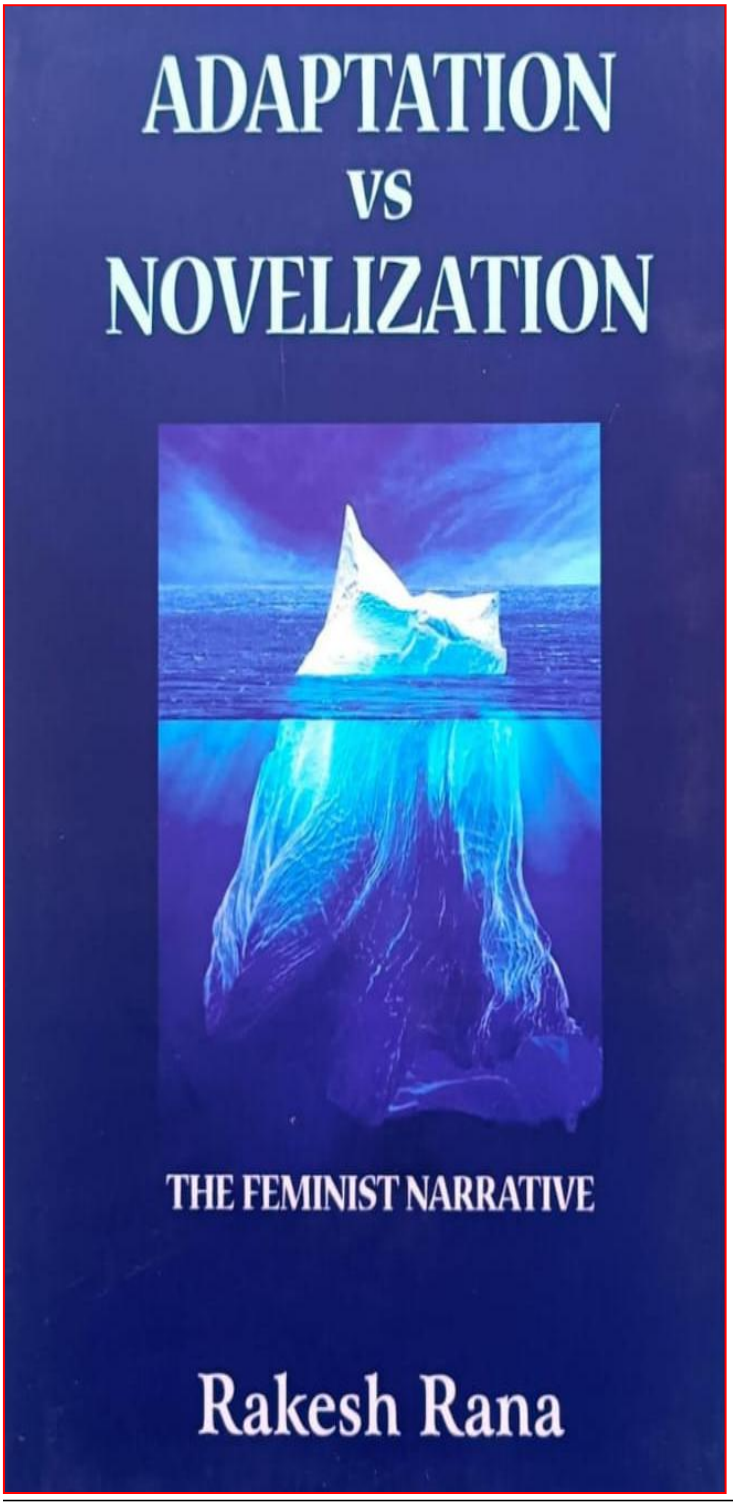

ANAMIKA PUBLISHERS & DISTRIBUTORS (P) LTD.
4697/3, 21A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi 110 002
Phones: 011-2328 1655, 011-43708938
E-mail: anamikapublishers@yahoo.co.in

First Published 2022
© Dr. Rakesh Rana
ISBN 978-93-91524-58-6

PRINTED IN INDIA

Published by Anamika Publishers & Distributors (P) Ltd., 4697/3, 21A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi 110 002. Typeset by Shivani Compuers, Delhi 110093 and Printed at Vikas Computer & Printers, Tronica City, Ghaziabad

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Statistics for Economists

By: Dr. Shashi Sharma
Dated: 2023

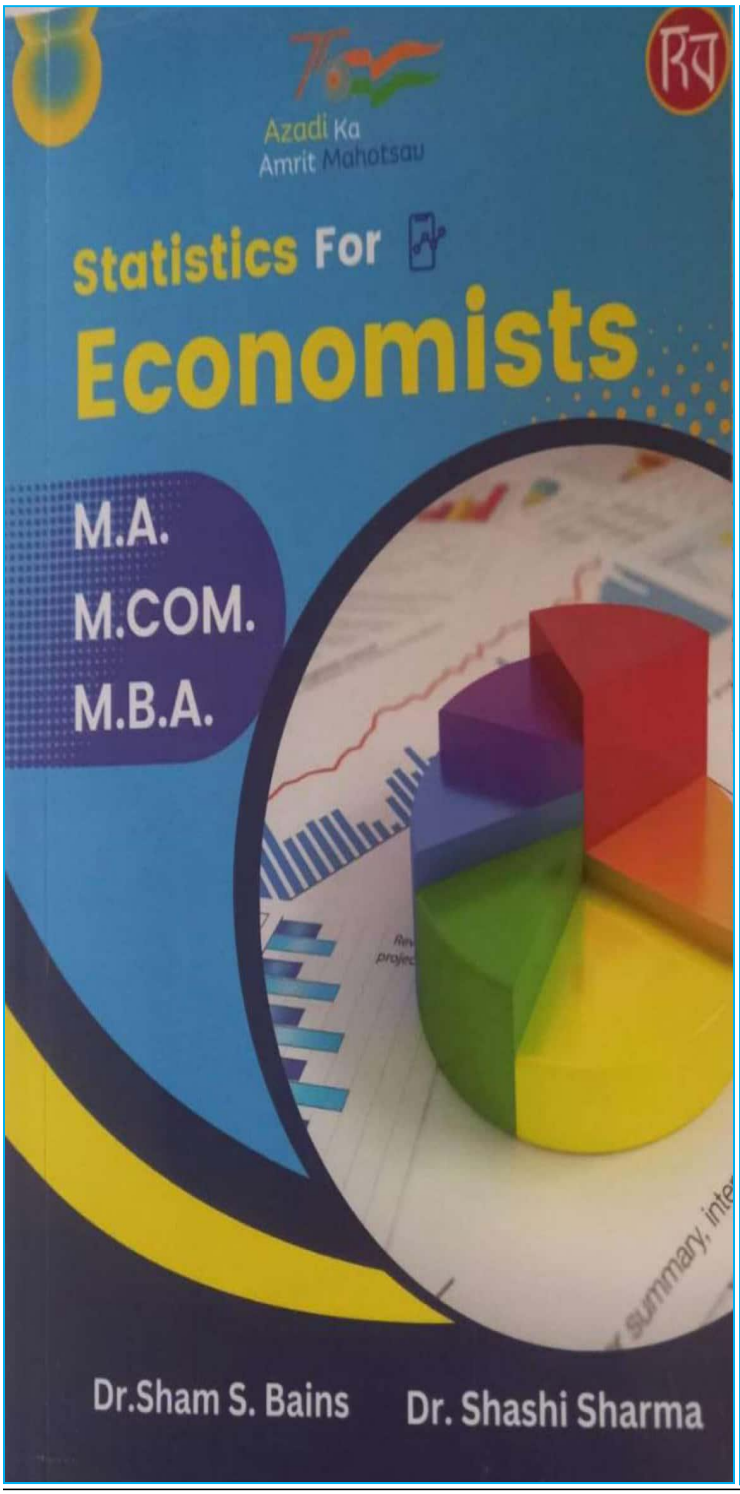

Publisher :

RV PUBLICATION PVT LTD
LALPUR KHADOOR SAHIB
PUNJAB PIN - 143401

Contact :

Call : +916239078973
Whatsapp : +916239078973
Email : publicationrv@gmail.com

Book Editing & Cover Design By:

Rahul Patidar
Mo.7974630790

Printer

Advik Printer Pvt Ltd
Laxmi Nagar Delhi-92

Copyright Notice :

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any manner without the prior written permission of the copyright owner & Publication.

ISBN : 978-81-958143-1-2

PRICE -749 INR

©2023 | Dr.Sham S. Bains | Dr. Shashi Sharma

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Statistics for Economists

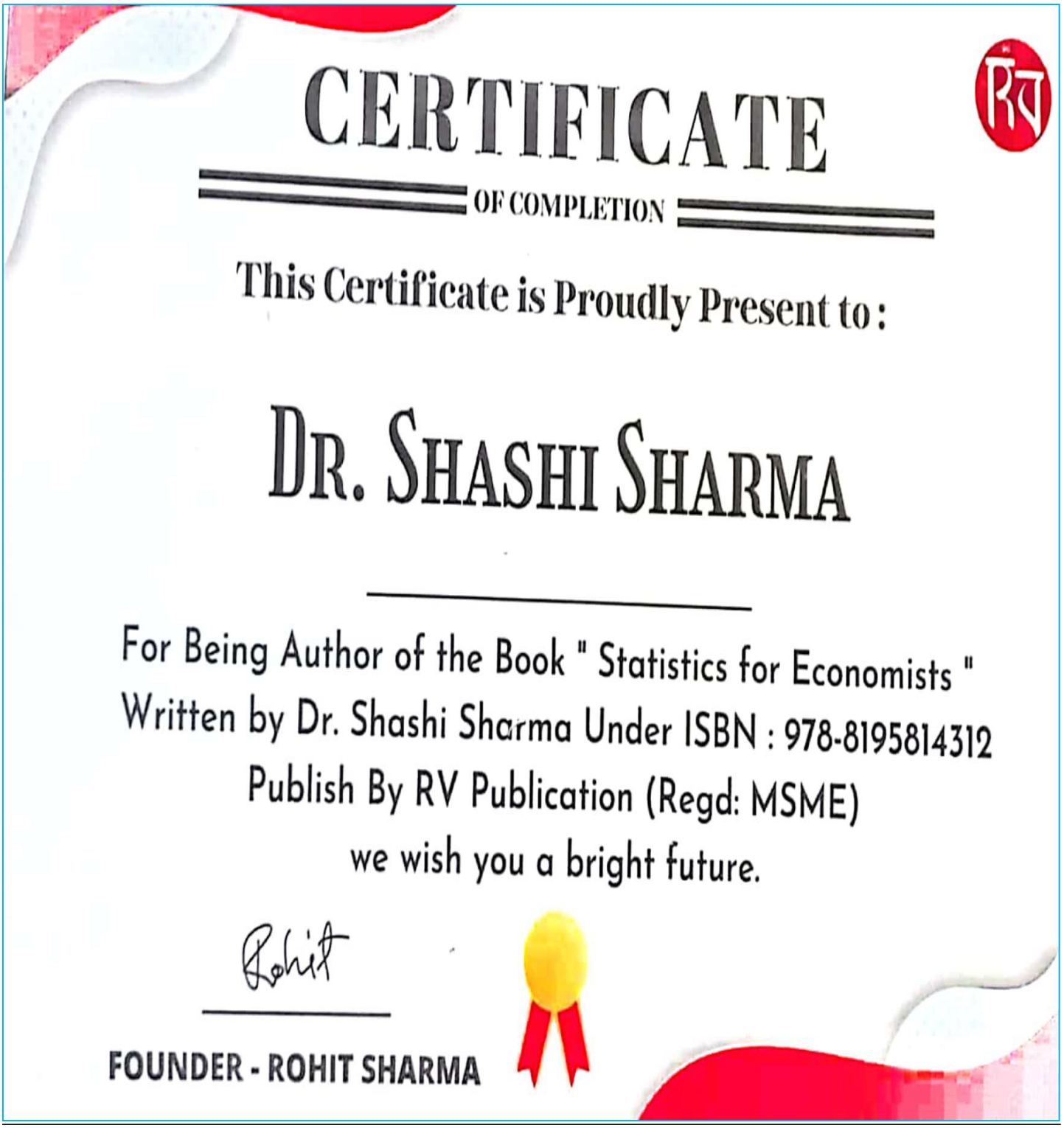

CERTIFICATE

OF COMPLETION

This Certificate is Proudly Present to :

DR. SHASHI SHARMA

For Being Author of the Book " Statistics for Economists "
Written by Dr. Shashi Sharma Under ISBN : 978-8195814312
Publish By RV Publication (Regd: MSME)
we wish you a bright future.

Rohit

FOUNDER - ROHIT SHARMA

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Entrepreneurial Skills among Tribals in Woollen Handloom Industry of Himachal Pradesh: A Survey

By: Dechan Chhomo

Dated: 2023

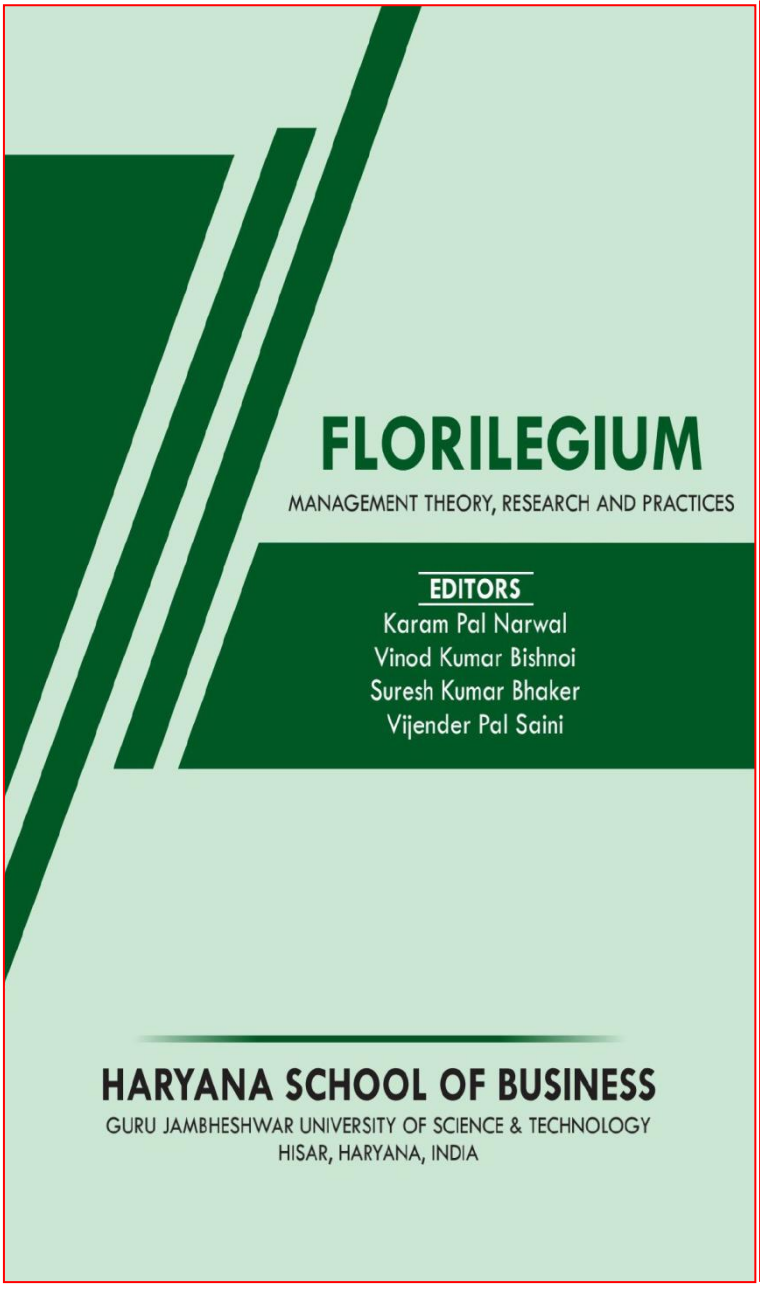

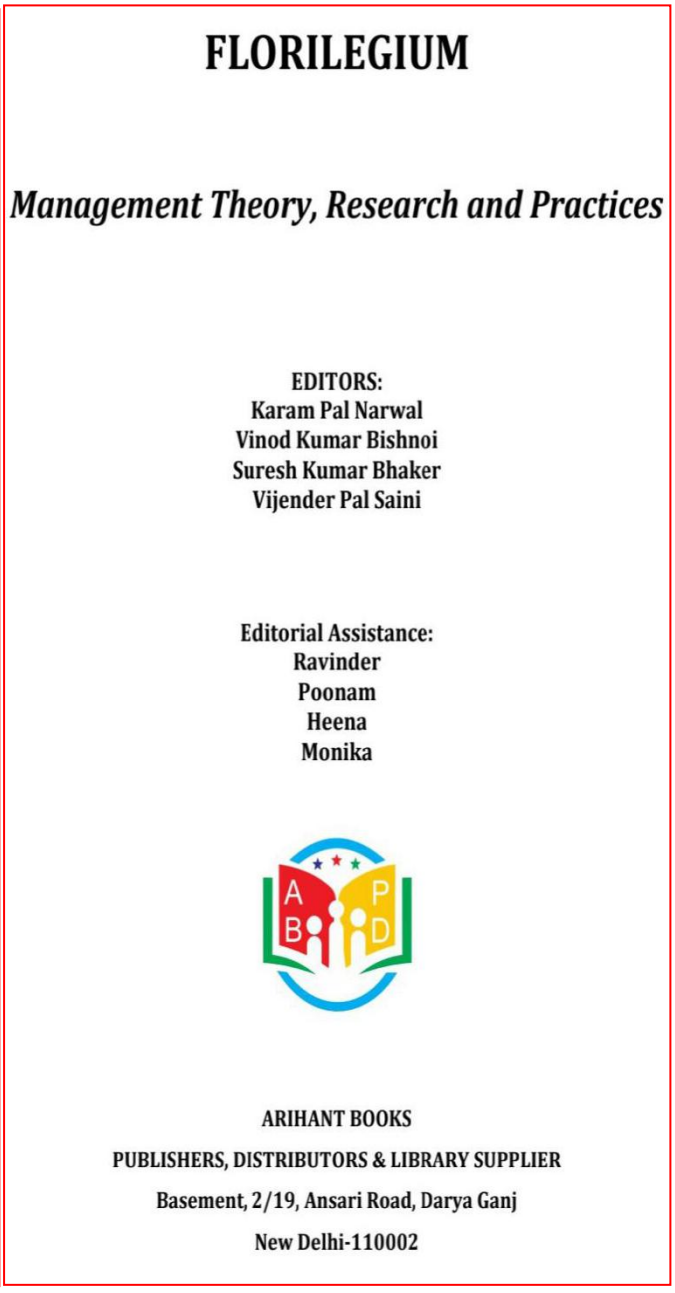

Govt college Kullu-175101
UGC -NAAC accredited
B++institution Phone No.
&Fax -01902-222568
E-mail: gckullu-hp@nic.in

Entrepreneurial skills among Tribals in Woollen Handloom Industry of Himachal Pradesh: A Survey

Chapter 53
Management of Road Accidents in India: A Systematic Review of Literature
Poonam and Tika Ram 539-547

Chapter 54
Consumers' Perception towards Implementation of GST
Khujan Singh and Amit Kumar 548-556

Chapter 55
Socio-Economic Analysis of Beekeeping Enterprise in Haryana
Vanita Ahlawat and Geeta Rani 557-567

Chapter 56
Russia-Ukraine Conflict: Revealing Its Great Consequences on Several Factors across the Globe
Amit 568-575

Chapter 57
Circular Economy: An Impact on Sustainable Development
Sunita Bharatwal and Preeti Attri 576-582

Chapter 58
Entrepreneurial Skills among Tribals in Woollen Handloom Industry of Himachal Pradesh: A Survey
Shyam L. Kaushal, Dechen Chhomo and Shetesh Kaushal 583-590

CHAPTER 58

Entrepreneurial Skills Among Tribals in Woollen Handloom Industry of Himachal Pradesh: A Survey

Shyam L. Kaushal[1], Dechen Chhomo[2], Shetesh Kaushal[3]
[1]Professor, University Business School
Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla, HP.
E-mail: kaushal.shyam@gmail.com
[2]Research Scholar University Business School
Himachal Pradesh University, Shimla, HP.
E-mail: dechen.29@gmail.com
[3]Research Scholar University Business School
Himachal Pradesh University, Shimla, HP.
E-mail: shetesh280794@gmail.com

The handloom sector provides a suitable context for examining the contribution of micro-entrepreneurs to regional economic growth. The informal sector plays a vital role in employment generation and sustaining the livelihood of 35.22 lakh people which is the second highest after agriculture. The handloom micro-enterprises are contributing significantly towards the development of tribal regions by creating opportunities for income generation, eradicating poverty, reducing disparity in income and checking migration. The present article aims to measure the entrepreneurial skills possessed by the tribal population of Himachal Pradesh who are engaged in running handloom enterprises. Based on primary data collected from 58 tribal entrepreneurs, the three dimensions of entrepreneurial skills were studied viz., risk-taking, innovativeness and business orientation. The results revealed that the majority of respondents scored high on the innovation scale, while the risk-taking and business orientation scales were rated moderately by respondents. The findings also reveal that the educational qualifications of micro-entrepreneurs have a significant and positive influence on innovativeness and business orientation scale. The study suggests improvement in infrastructural facilities primarily in the area of education to help tribal handloom business owners develop entrepreneurial skills.

Keywords: *Micro entrepreneurs, Handloom, Tribal entrepreneurs, Entrepreneurial skills, Education*

INTRODUCTION

Entrepreneurship is increasingly recognized as a major driver of economic development. The micro, small and medium enterprises contribute significantly towards the development of a region by creating opportunities for income generation, eradicating poverty, reducing disparity in income and checking migration. The less capital-intensive nature of the handloom industry has attracted many entrepreneurs, especially in rural areas where people have limited access to formal financial institutions[1] (Zhang, Moorman, & Ayele, 2011). However, in the era of globalization and modernization, micro-entrepreneurs in the handloom industry are unable to capitalize on increasing market opportunities in the same manner as high-tech firms. The micro-entrepreneurs need to focus on the production of high-quality products that resonate with the tastes and preferences of the customer in order to benefit from emerging markets[2] (Wang & Yang, 2016). This can be achieved through improving entrepreneurial skills as entrepreneurship is "the study of sources of opportunities; the processes of discovery, evaluation, and exploitation of opportunities; and the set of individuals who discover, evaluate, and exploit them"[3] (Shane & Venkataraman, 2000). Entrepreneurs create value through the formation of enterprises by combining existing resources and imaginative ideas and developing unique, customer-valued products in the hope of earning profits. To produce unique customer-valued products it becomes imperative to undertake risk. Innovation and risk-taking go hand in hand and are two sides of the same coin. The micro-entrepreneurs need to undertake risk, be it financial or non-financial (risk of time and effort) in order to become innovative and generate profit[4] (Goswami, Hazarika, & Handique, 2017). Carland & Carland, (1997)[5] analyzed that a higher level of risks combined with a higher level of innovation produced higher levels of entrepreneurial orientation.